Chap-5

पंचम अध्याय

साठोत्तर कहानी और पारिवारिक जीवन

प्रथम अध्याय में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि साठोत्तर कहानीकार अपने परिवेश के संक्रान्त जीवन के प्रति जितना सजग रहा है, उतना पूर्ववर्ती - कहानीकार प्राय: नहीं था । यही कारण है कि कहानी आज अनायास ही युग की एक प्रतिनिधि विधा के रूप में प्रस्तुत हुई है । आज का कहानीकार अपने इस वर्तमान के प्रति विशेष रूप से प्रतिबद्ध है, जिसके मध्य प्रत्येक व्यक्ति जीवन-यापन करता है । जैसा कि तृतीय अध्याय के अन्तर्गत निर्दिष्ट किया जा चुका है कि सन् साठ के बाद देश की राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक परि-स्थितियों में बदलाव के कारण पारिवारिक जीवन में विशेष परिवर्तन आया है । फलस्वरूप नये पारिवारिक संघर्ष उत्पन्न होने लगे । साथ ही साथ नये अविष्कार, नये सिद्धान्त, नयी विचार-धाराएँ तथा नयी योजनाओं से परि-स्थितियों में अनेक परिवर्तन आये । इसका परिणाम समूह या समुदायों के पर विशेष रूप से पड़ा । पूर्ववर्ती अध्यायों सम्बंध तथा पारिवारिक सम्बधों में यह भी लक्ष्य किया जा चुका है कि सन् १९६० ई० के पहले समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली का जो विघटन दिखायी पड़ता है, साठ के पश्चात् उसमें तीव्रता आ गयी । आज प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र रूप से, अपने निजी ढंग से जीना चाहता है । मानव का तद्विषयक दृष्टिकोण दिन-प्रतिदिन परिवर्तित होता जा रहा है । जिसे हम चतुर्थ अध्याय में लक्ष्य कर चुके हैं ।

साठोत्तर कहानी अपने स्वरूप में वस्तुपरक अनुभवों की कहानी है जिसमें कहानी का बदलता परिवेश तथा जीवन की संश्लिष्टताओं की ओर संकेत मिलता है । सन् साठ से पूर्व की कहानियाँ अधिकतर कहानी-कला-मूल्यों को लेकर रची जाती थीं, जबकि आज की कहानियाँ जीवन मूल्यों को लेकर । इस प्रकार

पहले की कहानी को एक प्रकार से कल्पनात्मक या झूठी कहानी व आज की कहानी यथार्थपूर्ण या सच्ची कहानी कही जा सकती है ।[१] इसी कारण कहानी की कथावस्तु तथा प्रकृति में भी विस्तार हुआ है, जिसके अन्तर्गत - जीवन व परिवेश में मिलने वाले समस्त अनुभव व क्षण आ जाते हैं । उदाहरण के लिए- पुराने मूल्यों का विघटन, भ्रष्टाचार, चोर बाजारी की मानसिकता से जुड़ी पराजित नयी पीढ़ी, आतंक, तनाव, विश्वासहीनता , नगरबोध की आधुनिकता, कामसम्बंधों की स्वतंत्रता, आर्थिक समस्याएँ , पारिवारिक सम्बंधों में परिवर्तन, प्राचीन व नवीन जीवन मूल्यों की टकराहट, ऊब, अकेलापन, क्षण- बोध, नानाविध पारिवारिक उलझनें तथा संघर्ष और अन्त में उनका टूटना आदि समस्त आचार- व्यवहार का यथार्थ चित्रण हमें साठोत्तर कहानी में मिल जाता है ।

साठोत्तर काल में कहानियों की संख्या लगभग सहस्त्र में पहुँचती है । हमारा प्रतिपाद्य साठोत्तर कहानी में पारिवारिक जीवन के आयामों से सम्बद्ध है । अत: यहाँ विषय- परिधि के अन्तर्गत आने वाली कहानियों का विवेचन ही अभीष्ट है । पारिवारिक जीवन से सम्बंधित भी लगभग तीन- सौ कहानियाँ मिलती हैं जिनकी सूची परिशिष्ट के अन्तर्गत अन्त में दी जा रही है। जिन कहानियों में पारिवारिक जीवन के बदलते सम्बंधों, स्थितियों, का चित्रण मिलता है, केवल उन्हीं का विवेचन इस अध्याय के अन्तर्गत किया जा रहा है । दूसरे इस चयन में प्रतिनिधि रचनाओं को ही दृष्टिगत करना

इसलिए अभीष्ट होगा, क्योंकि इनकी भी बहुत बड़ी संख्या है ।

साठोत्तर कहानियों की कथा-प्रवृत्तियों के विषय में अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों के अतिरिक्त उनके विशेषांक भी प्रकाश में आ चुके हैं । इस सन्दर्भ में कुछ पत्रिकाओं जैसे-`आधार` का सचेतन कहानी विशेषांक,`अणिमा` का सातवें दशक की हिन्दी कहानी विशेषांक, कल्पना, कहानी, नयी कहानी, नयी धारा, गल्प भारती, उत्कर्ष, सारिका, ज्ञानोदय, नागफनी, संचेतना, समीक्षा, लहर, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्मयुग आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । इसमें सन्देह नहीं कि इन प्रकाशनों ने साठोत्तर कहानियों के प्रभाव की प्रतिष्ठा की ।

पूर्ववर्ती अध्याय में इस पर विस्तार से विचार किया जा चुका है कि आधुनिक युग में जीवन की यथार्थता के क्रमश: विकास के कारण १९६० ई० तक आते- आते पुरानी धार्मिक मान्यताओं, आस्थाओं एवं विश्वासों के टूटने और उन पर प्रश्न चिन्ह लगाने की प्रक्रिया तेज हो जाती है । स्वभावत: साठोत्तर कहानियों में आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति विशेष आस्था नहीं दृष्टिगोचर होती । इनमें नवीन नैतिक मूल्यों का अन्वेषण तथा प्राचीन आचरण सम्बंधी मान्यताओं का विघटन विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है । पूर्ववर्ती अध्याय के विवेचन से यह भी स्पष्ट है कि आर्थिक - संघर्ष, शिक्षा तथा नारी साहचर्य की कामना व तत्सम्बंधी असन्तोष आदि

इसके मुख्य कारण माने जा सकते हैं । आज का कहानीकार समाज-जीवन में विकसित या परिवर्तित इन जीवन-आयामों को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से देखता-परखता हुआ कहानी में उनका आकलन करके अपनी रचना को ताजगी प्रदान करता है । यह ताजगी वस्तु तथा शिल्प दोनों की कही जा सकती है । अत: यह स्वयंसिद्ध है कि अनेक परम्परागत आचरण यथा- शील-रक्षा, प्रेम, त्याग, नैतिकता, दया, उदारता, तथा सत्य- विषयक आदर्शोन्मुख आचरण आदि वैवाहिक जीवन के आदर्श इन कहानियों में पूर्ण रूप से नहीं मिल पाते । इस युग में संयुक्त परिवारों का विघटन ही नहीं, अपितु पारिवारिक सम्बंधों के परस्पर सम्मान, स्नेह और सौहार्द तथा पारिवारिक मर्यादा की भावना समाप्तप्राय सी हो चुकी है । आज की कहानी में पारिवारिक जीवन के इन पक्षों का सजगता के साथ अंकन हुआ है ।

उपर्युक्त वस्तुस्थिति के साथ यह भी उल्लेखनीय है कि वैयक्तिक स्वतंत्रता, बौद्धिकता एवं यूरोपीय जीवन पद्धति के प्रति आकर्षण ही नहीं, अपितु उक्त पद्धति और जीवनदृष्टि का संक्रमण पारिवारिक जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करता जा रहा है । बिरादरी अब जाति या सामाजिक वर्ग- विशेष की नहीं, अपितु जीवन- दृष्टि तथा आर्थिक स्थिति के कारण बनती-बिगड़ती है । पति-पत्नी के सम्बंध भी उक्त प्रभावों से अछूते नहीं रहे । अत: इन कहानियों में टूटते हुए परम्परागत पारिवारिक सम्बंध विकसनशील नये सम्बंध, नारी का आर्थिक संघर्ष तथा नवीन भाव-भूमि में प्रवेश, बदलता हुआ पारिवारिक परिवेश, मानव के अस्तित्व का प्रश्न, प्रेम तथा यौन सम्बंधों की - समस्याएँ, मानव का टूटता हुआ व्यक्तित्व पूर्ण रूप से चित्रित होता है।[२]

पारिवारिक जीवन के विविध पक्षों के दृष्टिकोण से पूर्ववर्ती विवेचन में साठोत्तरी कहानियों में जीवन का जो रूप लक्ष्य किया गया है उसे ध्यान में रख कर पारिवारिक जीवन के विविध आयामों की चर्चा यहाँ की जा रही है । आज के पारिवारिक जीवन के क्षिप्र परिवर्तन के मूल में परम्परागत पारिवारिक जीवन का बदलता स्वरूप है, जिस पर सर्वप्रथम विचार किया जा रहा है ।

(क) परिवार का स्वरूप परिवर्तन :

तृतीय अध्याय के विवेचन से स्पष्ट है कि जिस स्वस्थ सामाजिक वृत्ति से प्रेरित होकर मानव ने परिवार संस्था का निर्माण किया था वही परिवार आज उसकी अति वैयक्तिकता, तथा आत्मोन्मुखी प्रवृत्ति के कारण विघटन के कागार पर खड़ा है । इस प्रकार परिवार का एक नवीन रूप आज हमारे सामने आता है, जिसमें एक ओर परंपरा से चले आ रहे संयुक्त परिवार टूट कर एकाकी परिवारों में विकसित होते जा रहे हैं । तो दूसरी ओर अनेक एकाकी परिवार भी विघटन की स्थिति में पहुँच रहे या टूट रहे हैं । फलस्वरूप पारिवारिक सम्बंधों के परम्परागत रूप में नितान्त परिवर्तन आ रहा है । मानव स्वतंत्र रूप से आत्मकेन्द्रित होकर अपने परिवार से दूर होता जा रहा है । यहाँ तक कि पिता- पुत्र, माँ-बेटी, पति- पत्नी या भाई-बहन जैसे निकटतम संस्कारी सम्बंधों में भी एक अजनबीपन का समावेश होता जा रहा है । साथ रहते भी ये एक दूसरे से दूर या कभी- कभी तो बहुत दूर कहे जा सकते हैं ।

१- पारिवारिक जीवन का विघटन :

उपर्युक्त सामाजिक पारिवारिक परिस्थितियों का साठोत्तर कहानी में न्यूनाधिक रूप से आकलन हुआ है । दो पीढ़ियों के निरन्तर संघर्ष को उजागर करने के साथ ही प्राचीन मान्यताओं का विरोध करने वाली कहानी 'वापसी' (उषा प्रियम्वदा) है । इसमें गजाधर बाबू वर्षों बाद नौकरी से रिटायर होकर घर आये हैं । घर में उनकी स्थिति अजनबी तथा अनचाहे मेहमान जैसी बन जाती है । परिवार में सुख तथा आत्मीयता की अपेक्षा-कृत तिरस्कार व उपेक्षा मिलती है । फलत: उन्हें उसी जगह वापस जाना सुखद प्रतीत होता है जहाँ वे पहले थे । '--- जैसे किसी मेहमान के लिए कुछ अस्थायी प्रबंध कर दिया जाता है, उसी प्रकार बैठक में कुर्सियों को दीवार से सटाकर बीच में गजाधर बाबू के लिए पतली सी चारपाई डाल दी गयी थी ।'[३] गजाधर बाबू द्वारा परिवार के सदस्यों की बातों में रुचि लेना तथा गलत बात पर टोकना उन्हें बुरा लगता था, जिससे गजाधर बाबू का हृदय खिन्न होने लगा ।' ---यदि बच्चों के जीवन में उनके लिए कहीं स्थान नहीं, तो अपने ही घर में परदेसी की तरह पड़े रहेंगे------ फिर पत्नी से पूछते हैं ----- सैर परसों जाना है, तुम भी चलोगी ? ' मैं ' ? पत्नी ने सकपका कर कहा------ मैं चलूंगी तो यहाँ का क्या होगा ।'[४] अन्त में गजाधर बाबू के घर से जाते ही उनकी पत्नी ने कहा' ----- अरे नरेन्द्र, बाबू जी की चारपाई कमरे से निकाल दे । उसमें चलने तक की जगह नहीं है ।---'[५] अत: स्पष्ट है कि एक ओर परिवार से अलग व्यक्ति का मोह समाप्त होता जाता है । वे अपनी वैयक्ति तकता में व्यस्त

रहते हैं , यहाँ तक कि पत्नी भी अपनी स्वतंत्रता चाहती है । इसी कारण वह पति के साथ नहीं जाना चाहती तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ रहने से उनके प्रति मोह हो जाता है । इस प्रकार परिवार में विघटन की भावनाएँ स्वाभाविक हो जाती हैं । परिवार से अलग रहने पर व्यक्ति एक दूसरे के प्रति निर्लिप्त से प्रतीत होते हैं । निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है, उक्त विघटन के कारण वैयक्तिक स्वतंत्रता, पीढ़ी का अन्तराल तथा परिवार के अलगाव से विकसित स्वभाव आदि हैं ।

इसी पारिवारिक विघटन की स्थिति का चित्रण `वेतन के पैसे ` (महीपसिंह) कहानी में भी मिलता है । जैसा कि तृतीय अध्याय के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा चुका है कि आधुनिक परिवेश में बढ़ते आद्योगीकरण, नगरीकरण तथा आर्थिक आवश्यकताओं के साथ-साथ वैयक्तिकता से सम्पृक्त होकर नयी पीढ़ी संयुक्त परिवार से दूर नौकरी पर बाहर रहने पर भी विवश हो जाती है । एक ओर संयुक्त परिवार में बिखराव आता है तो दूसरी ओर एकाकी परिवार में भी जीवन के नये व्यवहार, आचार- विचार सुखद प्रतीत होते हैं । `वेतन के पैसे ` कहानी का नायक गोपाल को परंपरागत संस्कार सम्पन्न पिता की आज्ञाओं का पालन जब असहय हो उठता है तब वह विरोध करता है`----उसमें असंतोष जाग रहा था, शायद इसीलिए कि वह अन्य भाइयों की अपेक्षा अधिक पढ़ा-लिखा था, या शायद इसलिए कि उसका विवाह अन्य भाइयों की अपेक्षा अधिक समृद्ध और सुसंस्कृत परिवार में हुआ था----।`[६] और विवश निर्णय लेता है कि`--- वे अपनी छोटी

सी गृहस्थी अलग बसायेंगे । तीसरे महीने के वेतन मिलने से पूर्व ही गोपाल कमरा ठीक कर आया ---।'[७] साथ ही साथ दाम्पत्य सम्बंधों में आर्थिक आवश्यकताओं के कारण परम्परागत मूल्य टूट कर किस प्रकार नयी धारणाएँ अपनाते जाते हैं, इसे व्यक्ति स्वयं नहीं समझ पाता । उपर्युक्त विवरणों से इस तथ्य पर प्रकाश पड़ता है कि नये मूल्य, नये व्यवहार, नये जीवन आयाम आज व्यक्ति को सुखद लगते हैं और वह अपनी मान्यताओं तथा व्यवहार में परिवर्तन लाता है । इसके परिणाम स्वरूप परिवार में विघटन के साथ-साथ जीवन मूल्यों में संक्रमण, नये मूल्यों की स्थापना व नये जीवन आयाम प्राय: दृष्टिगोचर होते हैं । उपर्युक्त कहानी इसका उत्तम उदाहरण है ।

ज्ञानरंजन कृत 'शेष होते हुए' कहानी में एक ऐसे परिवार की कथा है जिसके समस्त सदस्य एक दूसरे के लिए अजनबी बनते जा रहे हैं । प्रत्येक व्यक्ति अपने सीमित परिवेश से आबद्ध होकर दूसरे से पृथक हो रहा है । फलस्वरूप ऐसा लगता है जैसे एक ही घर में दूसरे कई घर बन गये हों । इस संयुक्त परिवार में वृद्ध माता-पिता, उनका विवाहित पुत्र, उसकी पत्नी, एक अविवाहित पुत्र तथा एक अविवाहित पुत्री साथ रहते हैं । एक मंझला अविवाहित पुत्र बाहर नौकरी करता है जब वह नौकरी से वापस घर आता है तब देखता है'-----एक ही घर में कई घर हो गये हैं । हर व्यक्ति के कमरे दूसरे से अलग, एक स्वतंत्र और पृथकता ज्ञापित करने वाला स्वभाव है--- पिता द्वारा लायी जाने वाली या उनके नाम पर आने वाली चीजें भैया-भाभी, टीनू और तारा के बीच बंट जाती हैं---' ।[८] मंझले ने देखा कि

लौटना चाहता है । इधर रज्जन को भी अपने परिवार में आत्मीयता की अनुभूति नहीं होती वह जाते समय कीर्ति से प्लेटफार्म पर अकेले में कहता है `------ ये मदर-फादर को क्या- क्या हो गया है । हम लोग इतने वर्षों बाद आये, लेकिन जैसे लगा किसी को खुशी नहीं हुई । सारा वक्त पापा उखड़ी-उखड़ी बातें करते रहे और मां का मुँह सूजा रहा --- रत्ना के दिल को इससे बड़ा धक्का लगा कि इतनी भावना से लाये प्रजेन्ट्स तक किसी ने एप्रिशियेट नहीं किये । पापा ने कोट छूकर भी नहीं देखा ---।`[११] दूसरी ओर सात वर्षों बाद परिवार के सदस्य भी पुत्र व पुत्रवधू के घर आने पर उनमें आत्मीयता की अपेक्षा उनके आचार- व्यवहार में परायेपन की अनुभूति कर रहे थे और सभी सदस्य अपने- अपने गन्तव्य में व्यस्त होना जल्दी चाह रहे थे ।[१२] इसमें दो भिन्न परिवेशों की संस्कारजन्य भिन्नता परिवार के प्रति अलगाव की भावना के लिए उत्तरदायी ठहरायी गयी है तथा अपने परिवेश के प्रति मोह व दूर रहते पुत्र व पुत्रवधू के प्रति उपेक्षा का भाव ही परिवार के विघटन का पथ प्रशस्त करता है ।

महीपसिंह कृत `सन्नाटा` कहानी भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय है । जहाँ मां-बेटी एक साथ रहते हुए भी कई- कई दिन तक बातचीत नहीं कर पातीं उनके मध्य एक अजनबीपन समाता जा रहा है ।`----- कैसी अजीब बात है । हमारे बीच जब तक कोई तीसरा व्यक्ति न आए हमें यह अहसास ही नहीं होता कि हम मां-बेटी हैं । हमें आपस में कोई बात किये हफ्तों गुजर जाते हैं । फ्लैट में एक दूसरी की छाया देखकर हमें बस एक दूसरे के होने

का अहसास होता है । अलग- अलग कमरे, अलग- अलग बाथरूम, यहाँ तक कि टूथपेस्ट भी अलग- अलग ।[१३] यह स्थिति छात्रालय में अन्यथा किसी अन्य कारण से घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों में भी मिलती है । छात्रालय में रहने वाली लड़कियों का परिवार से स्नेहहीन, उपेक्षित व्यवहार, मां-बेटी का पार्थक्य, पिता-पुत्री का प्रार्थक्य, स्वाभाविक रूप से दृष्टिगोचर होता है । इनका चित्रण- `कटी हुई तारीखें `(अन्विता अग्रवाल) `तलाश`(कमलेश्वर),`मायादर्पण` (निर्मल वर्मा) आदि कहानियों में मिलता है । मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों के कारण इनमें दमित वृत्ति , मातृरति, हीनता ग्रंथि, अन्तर्मुखी चेतना प्रधान वृत्ति प्रमुख बन गयी है । यही प्रवृत्तियाँ स्वाभाविक रूप से नर- नारी सम्बंधों में समाविष्ट होकर मन: स्थिति में परिवर्तन ला देती हैं । साथ ही जीवन की कृत्रिमता, मूल्यहीनता तथा - अव्यवस्था का प्रतिपादन `छीजते हुए क्षण` (कुन्तल गोयल),`दाम्पत्य` (राजकमल चौधरी) आदि कहानियों में मिलता है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि संयुक्त परिवार में आज वैयक्तिकता से बोझिल होकर प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवेश में सिमटता जा रहा है । उसका परिवेश उसका अपना `दायरा` मात्र बनता जा रहा है। रामकुमार की `दायरा` कहानी भी लगभग इसी तथ्य की पुष्टि करती है। माता-पिता, पति-पत्नी, सभी अपने कार्यों में व्यस्त हैं । अपने परिवेश के संघर्ष के मध्य व्यक्ति दूसरों की समस्या समझने में प्राय: असमर्थ रहता है । मां की अपनी मृत पुत्री के पति व बच्चों की चिन्ता है । पिता को अपने

रोगों के गुणगान करने की अत्यधिक आदत है । पत्नी कुछ अनुभव करना चाहती है तब पति की डाँट पड़ जाती है । वह स्वयं भी अतीत की स्मृतियों से मुक्त नहीं हो पाती । इस प्रकार परिवार में अपने- अपने दायरों में सिमटते प्रत्येक सदस्य की अपनी अलग कहानी बन जाती है । इनकी सम्बंध-हीनता व असमायोजन की परिणति मोहन राकेश कृत 'क्वार्टर' कहानी में मिलती है, जहाँ सभी सदस्य अस्थायी रूप से रहने के लिए एकत्रित हुए हैं। इनकी वैयक्तिकता अत्यन्त विकसित हो चुकी है । सभी सदस्यों का आर्थिक बोझ राजवंशी उठाता है । भाई, बहन, पिता सभी अपने- अपने दृष्टि-कोण व दूसरे पर लादना चाहते हैं----- पिता खाट पर पड़े- पड़े बड़बड़ाया करते हैं । बड़े भाई नौकरी के कारण घर में पदार्पण करते हैं, तो दूसरे भाई ससुराल से लड़ कर आये हुए हैं । इधर अपनी- अपनी ससुराल से आयी बहनों की शिकायत है कि राजवंशी की पत्नी उनका ख्याल नहीं करती । राधा को अपनी गृहस्थी (अपने पति की कमाई) में दूसरों का हस्तक्षेप तथा अपनी उपेक्षा अच्छी नहीं लगती । मिसेज शर्मा और मिसेज लल्ला के सम्बंधों को लेकर शंकर और राधा के दाम्पत्य जीवन में भी दरार आयी हुई है । बहन, भाई, पिता, पत्नी सब अपनी-अपनी सोच रहे हैं । शंकर सोच रहा है उसकी चिन्ता किसी को नहीं है ।[१४] प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थ में लिप्त रहता है और परिवार के प्रति उसकी आत्मीयता एक प्रकार से समाप्त सी दिखाई देती है ।

यही कारण है कि आज एक ओर छोटे भाई द्वारा आत्महत्या की

धमकी बड़े भाई के लिए दु:ख या पश्चाताप का विषय न होकर निर्मम समस्या का समाधान बनती है तो दूसरी ओर व्यक्ति मां के असीम आशीर्वाद की छत्र-छाया से दूर उसके मरने की कामना करता है । कहीं- कहीं तो उसका विचार दिखाई देता है कि यदि मेरी मां भी मर गयी होती तो अनेक अनचाही स्थितियों का सामना न करना पड़ता ।[१५] इस प्रकार की स्थितियाँ कहानियों में पारिवारिक विघटन का पथ पूर्ण रूप से प्रशस्त करती हैं । पारिवारिक विघटन को प्रकाशित करने वाली इसी प्रकार की कहानी दूधनाथ सिंह की 'आइसवर्ग' है जिसमें विनय पूर्ण रूप से परिवार से अलग हो जाता है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट होता जा रहा है कि परिवार के विघटन की स्थितियाँ, नयी पीढ़ी का स्वतंत्र रहना, पुरानी पीढ़ी का अपने परिवेश के प्रति मोह तथा एक सीमा तक आर्थिक विवशता, वैयक्तिक चेतना की प्रतिक्रिया को प्रबल बनाकर पुरानी पीढ़ी के साथ अधिकाधिक संघर्ष के लिए प्रोत्साहित कर रही है । इसमें आधुनिक बोध का संक्रमण भी पूर्ण रूप से कार्य करता है । यह प्रवृत्तियाँ कहानियों में पारिवारिक सम्बंधों तथा विघटन का विशिष्ट आयाम बन रही हैं, जिसका कारण कहीं- कहीं मात्र नगरी तथा ग्रामीण परिवेश जन्य भिन्नता को भी माना जा सकता है । यह सत्य है कि ग्रामीण अंचल से सम्बंधित अपेक्षाकृत कम कहानियाँ आलोच्य काल में मिलती हैं फिर भी अनेक कहानियों में पारिवारिक विघटन की स्थिति मात्र ग्रामीण व नगरी परिवेश के द्वन्द्व के

कारण दिखाई देती है, जिन पर यहाँ विचार कर लेना आवश्यक है ।

२- ग्रामीण तथा नगरीयपरिवेशजन्य द्वन्द्व व पारिवारिक विघटन :

पूर्ववर्ती अध्यायों में निर्दिष्ट किया जा चुका है कि औद्योगीकरण व नगरीकरण के फलस्वरूप छोटे नगर बड़े नगरों में तथा गाँव नगरों में परिवर्तित होने की स्थिति में आ रहे हैं । इनमें रहने वाले परिवार अपने परंपरागत संस्कारों के प्रति आस्थावान दिखायी देते हैं । तथा नगर में आ जाने पर नगरीयपरिवेशजन्य भिन्नता भी कुछ व्यक्तियों के आचार- व्यवहार में आ जाती है और वे अपने परिवार के साथ पूर्ण सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते । यही प्रभाव कुछ कहानियों में प्रतिलक्षित होता है क्योंकि इन बदलती परिस्थितियों तथा मानसिकता से आक्रान्त मानव शहर आने पर भी अपने गाँव के घर की मानसिकता से जुड़ा रहता है । 'चिट्ठियों के बीच' (रामदरश मिश्र) कहानी इसी प्रकार की है जहाँ डॉ० देव शहर में रहता है पर गाँव में अपने परिवार की आवश्यकताओं व मन: स्थितियों के दबाव की अनुभूति करता है । ये दबाव भावात्मक सम्बंधों को तनाव पूर्ण बनाते हैं । सम्बंधों का यह तनाव या द्वन्द्व ही मानसिक स्तरों को अलग करता जाता है ।[१६] इन्हीं अनुभवों का सघन रूप 'मां, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो' (धर्मयुग, २६ फरवरी, १९६७) में मिलता है । जहाँ एक ओर नायक मां की मृत्यु के दु:ख में उजड़े गाँव को देखता है, वहाँ व्यक्तियों के पास न रहने के लिए घर है और न खाने के लिए अन्न तो दूसरी ओर शहरों में रेडियो पर मंत्रियों के कोरे भाषण सुनायी देते हैं । वह पिता से गाँव छोड़कर नगर आने

का प्रस्ताव करता है परन्तु स्वयं ही परिवार से कटता जाता है । 'खंडहर की आवाज' कहानी में भी इसी लेखक ने ग्राम जीवन की विसंगतियों और - विषाक्त राजनीतिक प्रभावों में उसके सन्निपात ग्रस्त वर्तमान को आकलित करने का प्रयत्न किया है । 'एक औरत : एक जिन्दगी' में औरत को गाँव की भवानी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है, जहाँ पुरुष सत्ता उससे टकराकर बिखर रही है । 'खाली घर', 'टूटता हुआ नगर' तथा लाल हथेलियाँ भी ग्रामांचल की भाव-भूमि पर पारिवारिक बिखराव तथा मूल्यों के द्वन्द्व की ही कहानियाँ हैं । अत: उल्लेखनीय है कि पारिवारिक सम्बंधों में बिखराव इस प्रकार की कहानियों में भिन्न-भिन्न रूपों में मिलता है, जिनमें कुछ पात्र ऐसे हैं जो गाँव छोड़ कर शहर आ गये हैं, किन्तु अपने अभिशप्त परिवारों के प्रति उत्तरदायित्व का अनुभव करते हैं । वे एक ओर अपने साथ शहरी परिवेश में जीते अपने बीबी-बच्चों की आवश्यकता कठिनाई से पूरी कर पाते हैं तो दूसरी ओर गाँव में बैठे अपने बूढ़े मां- बाप और भाई- बहन के लिए भी चिंतित रहते हैं । गाँव के परिवार के प्रति अपनी पूरी संवेदना के साथ जुड़े रहकर भी वे उससे कटते- से जाते हैं । शहरी जीवन की बढ़ती हुई - आवश्यकताएँ गाँव में रहने वाले परिवार के प्रति उनके सम्बंधों को शिथिल बनाती हैं । यदि व्यक्ति दोनों को बनाये रखने का प्रयत्न करता है तब पति-पत्नी, बच्चों के मध्य टकराहट व तनाव की स्थितियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं ।[१७] इस स्थिति का सशक्त चित्रण लेखक ने 'दूरियाँ' कहानी में किया है । जहाँ अलगाव की संवेदना से अभिशप्त तथा नगर में सुविधा-जनक आधुनिक जीवन व्यतीत करने वाला पप्पू गाँव आकर परिवार में तनिक परंपरागत मान्यताओं द्वारा उत्पन्न असुविधा का सामना नहीं कर पाता और

समस्त पारिवारिक सम्बंध बिखरते दृष्टिगोचर होते हैं ।[१८] 'एक वह' कहानी संग्रह की अनेक कहानियों में टूटते मन के द्वन्द्व और सम्बंधों के साथ- साथ नयी पीढ़ी नये मूल्यों को स्वीकारने की किस प्रकार आकांक्षणी बनी हुई है । चित्रित करने का प्रयत्न किया है । परिस्थितियों के कारण बदलते हुए मानवीय सम्बंधों का व्यापक चित्रण 'पराया शहर ','घर' कहानी में मिलता है ।

बल्लभसिद्धार्थ की 'तनहाई' कहानी(सारिका पत्रिका- अप्रैल -१९६९) में नगरीयपरिवेश में रहने वाला बेटा गाँव में आकर अपने नगरीयजीवन को विस्मृत नहीं कर पाता । वह अपने बूढ़े बाप के समक्ष सूट- बूट पहने अकड़ कर बैठा हुआ सिगरेट पीता रहता है । लगता है जैसे वह शहर से गाँव में अपने बाप की किसी इन्क्वायरी के लिए आया हुआ ऊँचे पद का अफसर हो। उसे अपने व्यक्ति तत्व के समक्ष गाँव के व्यक्ति का जीवन अत्यन्त तुच्छ व घृणित लग रहा है । इसी स्थिति का द्योतन करती तथा बेटे को माता-पिता व गाँव के जीवन से अलग करती हुई कहानी 'संतप्त लोक' (गोपाल उपाध्याय- धर्मयुग-२६ फरवरी,१९६९) है ।

नगरीयपरिवेश में रहने के बाद गाँव में पलने वाला व्यक्ति अपने को गाँव वालों से कहीं अधिक उच्च मानने लगता है । सुबोध श्रीवास्तव की कहानी 'कुम्हड़े की सब्जी' (नई कहानियाँ, अप्रै,१९६९) इसी प्रकार की है । इसका नायक नगर में लेक्चरर हो जाता है और छुट्टियों में घर आने पर पग-पग पर

ग्रामीण परिवेश के मूल्य व व्यवहारों से टकराता है । घर में गोबर की गन्ध तथा बछड़े को सहलाने में वह अपना अपमान समझता है । बाप के दाँतों की पायरिया की दुर्गन्ध को एक ओर नकारता है तो दूसरी ओर गाँव में रहती पत्नी के घूँघट, काजल, सिन्दूर व हाथ जोड़ कर प्रणाम करने की आदत को पिछड़ा हुआ मानता है और परिवार में अपनत्व की अपेक्षा एक घृणा का रूप पाता है जिससे कटता चला जाता है । इसी लेखक की 'कुछ करने के लिए' कहानी के नायक एस०डी०ओ० महोदय है जो बहन की शादी में अपने गाँव के परिवार में आते हैं । यहाँ स्थिति विपरीत है । यहाँ वे अपनत्व की खोज करते हैं, परन्तु गाँव वाले उन्हें ऊँचा अफसर मान कर अपनत्व नहीं दे पाते । घर का कोई कार्य नहीं करने देते तथा अपनत्व की जगह पारिवारिक सम्बंधों में अजनबीपन की भावना देखकर एस०डी०ओ० में अलगाव की भावना सहज उत्पन्न होने लगती है ।

इससे अधिक गंभीर स्थिति 'बेकार' (रामजी मिश्र- ज्ञानोदय-अप्रैल-१९६९) कहानी में है । गाँव से नगर आकर नौकरी करने वाला नायक 'वह' न तो नगरीय परिवेश में अपने को फिट कर पाता है और न ही छुट्टियों में गाँव आकर आने पर परिवार में अपनत्व को प्राप्त कर पाता है । वह तीन वर्ष से दिल्ली में रह रहा है । वहाँ का परिवेश उसे मात्र निरन्तर कार्यरत मशीन से अधिक कुछ नहीं लगता तथा अपनत्व की खोज में अपने गाँव के परिवार में आता है, लेकिन उसे लगता है कि वह सबसे कटता जा रहा है । परिवार के सदस्य भी उसे नगरी परिवेश का मानकर अपने से अलग मानने लगे हैं । यहाँ

तक की `वशीकरण` (मधुकर गंगाधर -रचना-२, १९६९) कहानी का पात्र उक्त आत्मीयता तथा आनन्दप्राप्ति के अभाव में आत्महत्या तक का विचार करने लगता है । इसी स्थिति से सम्बंधित `सामना` (ओमप्रकाश दीपक, धर्मयुग-२३ फरवरी,१९६९) तथा `भूख ` (जितेन्द्र कुमार मित्तल) कहानी है ।

इन कहानियों में कहीं- कहीं व्यक्ति नगरी परिवेश की अपेक्षा ग्राम जीवन से अधिक प्रभावित होता है और उसके प्रति आकर्षित होता है । `वह-दिन` (मधुकर सिंह-कहानी- नववर्षांक १९६९) इसी प्रकार की कहानी है । इसका नायक कलकत्ते में मजदूर यूनियन का लीडर है तथा समस्याओं को यथा-संभव सुलझाने का प्रयत्न करता है । पत्नी का पत्र मिलते ही वह जब गाँव आता है तो उसे लगता है गाँव की समस्याएँ नगर की समस्याओं से अधिक जटिल हैं । उन्हें सुलझाना अधिक आवश्यक है तथा नगर छोड़ वह गाँव के परिवार के साथ रहता है और बिखरता परिवार फिर से जुड़ने लगता है । अभिमन्यु अनन्त की कहानी `वापसी सूरज की` (कल्पना पत्रिका-जून-१९६९) भी इसी प्रकार की है ।

ग्रामीण जीवन के प्रति आकर्षण का अन्य पहलू तथा सेक्स का प्रदर्शन शिवानी की `पुष्पहार` (सारिका-दिसम्बर-१९६८) कहानी में मिलता है । इसमें ग्रामीण जीवन का साधारण व्यक्ति एक दिन मंत्री बन जाता है और पहाड़ी सड़क का उद्घाटन करने अपने पहाड़ी गाँव में आता है जहाँ रास्ते

में मेंढ़ बकरियों के साथ अपनी पुरानी प्रेमिका को देखता है जो अब दूसरे की पत्नी है । फिर वह उसी प्रेमिका के प्रति प्रेम उमड़ने के कारण बार- बार उस गाँव में आता है और गाँव को एक हवाई द्वीप जैसा बना देता है । नगरीय परिवेश से सम्पृक्त होकर वह प्रेमिका के साथ स्वच्छन्द विचरण करता है और प्रेमिका के पति के प्रयत्नों से पकड़ा जाता है जहाँ गाँव वालों द्वारा उसकी पिटाई होती है । वह कभी नगरीय परिवेश को, कभी अपने बड़े-पन को तो कभी गाँव के भयंकर यथार्थ को बुरा कहता है । शिवप्रसाद सिंह के `इन्हें भी इन्तजार है` तथा `मुरदा सराय` संग्रहों में इसी प्रकार की कहानियाँ हैं । इनमें `एक यात्रा सतह के नीचे ` तथा `बीच की दीवार` कहानियाँ अधिक सशक्त हैं । प्रथम कहानी में अवधू छुट्टियों में गांव के परिवार में आया है परन्तु पत्नी से न मिल पाने की विवशता में परंपरा की गन्ध व बेटे- बहुओं के रात्रि-मिलन में सास के नियंत्रण को प्रत्येक क्षण कोसता रहता है । मां के कड़े अनुशासन के कारण पत्नी अन्दर तथा पति बाहर तड़पता रह जाता है, जिससे कुंठा, संत्रास तथा ग्रामीण मूल्यों के प्रति वितृष्णा या व्यर्थता के बोध का जन्म होता है और वह विद्रोह करने की असमर्थता में वहां से पलायन करने का विचार करता है । पलायन करने की अपेक्षाकृत इस स्थिति के प्रति विद्रोह करने की स्थिति दूधनाथ सिंह की `रक्तपात` कहानी में मिलती है । इसमें नायक बुढ़िया मां(सास) के रूप में ग्राम के सड़े मूल्यों को धक्के देकर निकालता व नकारता है । ग्रामीण व नगरीय परिवेश के कारण उत्पन्न द्वन्द्व से प्रेरित कहानियों में `अतिथि सत्कार` (फणीश्वरनाथ रेणु), `बोलने वाले जानवर`(ज्ञानी),`बिकुड़ता हुआ गाँव` (रणधीर सिन्हा), `वापसी`(शैलेश मटियानी) आदि का नाम भी उल्लेखनीय है ।

अत: कहा जा सकता है कि पारिवारिक जीवन के विघटन के अनेक कारण इन कहानियों में अंकित हुए हैं । द्वितीयत: चाहे वह परिवेश की भिन्नता हो या संस्कारगत भिन्नता हो- दोनों के कारण मूल्यों में इस प्रकार का संघर्ष उत्पन्न होता है जहाँ परिवार के सदस्यों को लगता है कि उनका व्यक्तित्व कुंठित होता जा रहा है । फलस्वरूप कहीं पुरानी पीढ़ी को घर छोड़ना पड़ता है तो कहीं नयी पीढ़ी को अपना चूल्हा अलग करना पड़ता है । उपेक्षा और हीन भावना इन सबके साथ-साथ गतिशील रहती ही है । यत्र-तत्र नयी पीढ़ी का विद्रोह भी लक्षित होता है ।

३- पीढ़ी संघर्ष-(नयी पीढ़ी की वैयक्तिकता के सन्दर्भ में) :

पूर्ववर्ती विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि पुरानी पीढ़ी के व्यक्ति जिन परंपरागत रीति-रिवाजों व मान्यताओं के समर्थक हैं, नयी पीढ़ी उसके विरोध में आवाज उठाती तथा उन मान्यताओं को अस्वीकारती है । आधुनिक परिवेश या पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव भी एक सीमा तक इसके लिए उत्तर-दायी है । राजेन्द्र यादव की `बिरादरी बाहर` कहानी में नयी-पुरानी पीढ़ी के संघर्ष को पूर्ण रूप से चित्रित किया गया है । इसमें पिता पुराने मूल्यों, रीति- रिवाजों के प्रति श्रद्धावान रहकर अपने परिवार से कटता चला जाता है, क्योंकि नयी पीढ़ी उसकी मान्यताएँ पूर्ण रूप से नहीं स्वीकारती। पुत्री के अन्तर्जातीय विवाह को स्वीकार न कर सकने की स्थिति में उन्हें दिल का दौरा पड़ जाता है । यहाँ तक कि दो वर्षों के अन्तराल के बाद पुत्र-वधू व बेटी-दामाद को वे निकट से देखने का साहस तथा उनसे आत्मीयता

पूर्ण व्यवहार नहीं कर पाते क्योंकि अतीत की स्मृतियाँ उन्हें सताती रहती है । उन्होंने अपनी पुरानी मान्यताओं के प्रति आस्थावान रहकर पुत्री को प्रेम- विवाह की आज्ञा नहीं दी, उसका विरोध किया तथा नयी पीढ़ी के प्रति आक्रोश का प्रदर्शन किया तो नयी पीढ़ी के द्वारा उन्होंने स्वयं को ही परिवर्तित समाज व मूल्यों के मध्य बिरादरी से अलग अनुभव किया ।[१९] इसी पीढ़ी संघर्ष तथा पारिवारिक बोध में भिन्नता की कहानी 'कटघरे' (भीष्म साहनी) है । इसमें पिता ने अपनी पुरानी पीढ़ी के साथ जिस प्रकार का व्यवहार किया और बुजुर्गों के आदेशों व आज्ञाओं का पालन किया है वैसे ही व्यवहार की अपेक्षा वे अपनी सन्तानों से करते हैं । यहाँ दिव्या अपने माता-पिता की आज्ञा का उल्लंघन करती है, और माता क्रोध में आकर उसकी पिटाई कर देती है । इस प्रकार स्पष्ट है कि एक पीढ़ी दूसरे के लिए कटघरे का रूप बनती जाती है । नयी पीढ़ी प्राचीन आदर्श रूपी कटघरे को तोड़ कर अपने नये मूल्यों का नया कटघरा बनाने का प्रयत्न करती है ।[२०] भीमसेन त्यागी की कहानी 'एक बिदाई और ' का बेटा अपने वैयक्तिक जीवन में पिता का अवरोध किसी रूप में स्वीकार नहीं कर पाता, भले ही उसे पिता को छोड़ना पड़े अथवा पत्नी या परिवार को त्यागना पड़े ।

तृतीय अध्याय के विवेचन से स्पष्ट है कि आज के वैज्ञानिक युग में औद्योगीकरण, नगरीकरण के कारण व्यक्ति घर से बाहर दूर शहर में रह कर नौकरी करने पर मजबूर होता है, और यही मजबूरी प्रायः एकाकीपन में विपरीत लिंगी पर आकर्षित होने उससे सम्बंध रखने में सहायक होती है ।

बेटा भी व्यस्तता व वैयक्तिकता से ओतप्रोत अपना विवाह सम्पन्न करके उसकी सूचना मात्र अपने परिवार को देकर अपने कर्तव्य का अन्त समझ लेता है। 'तट से टूटते हुए '(सुरेश सिन्हा) कहानी इसी जीवन- आयाम को लेकर लिखी गयी है ।[२१]

पुरानी पीढ़ी की आग्रह भरी मान्यताओं तथा अनेक आधार पर नियंत्रण , नयी पीढ़ी का वैयक्तिक अहं तथा स्वतंत्रता की चेतना से उत्पन्न संघर्ष आज इतना उग्र रूप लेता जा रहा है, जिसमें पूर्वनिर्दिष्ट पारिवारिक जीवन विषमता और अजनबीपन से भरता जा रहा है । लगता है कि परिवार के सदस्य एक परिवार के न होकर किसी प्रतीक्षालय में एकत्र हुए यात्री हों । इस वस्तु स्थिति से ओत- प्रोत 'पराया शहर'(कमलेश्वर) कहानी भी उल्लेखनीय है , जिसमें पिता दुर्गादयाल की आर्थिक विवशताओं तथा भावुकता से आकुल होकर उसका बेटा सुखबीर उनका विरोध करता है, परन्तु पितृमोह से पूर्णत: मुक्त नहीं हो पाता । वह पिता द्वारा उपेक्षा का पात्र बनता है फिर भी पिता की उपेक्षा नहीं कर पाता । वस्तुत: यह पीढ़ी के अंतराल को अभिव्यक्त करने वाली कहानी है । इसमें पीढ़ी का संघर्ष और खुली अस्वीकृति का उभार प्राय: नहींवत् है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वैयक्तिक चेतना से अभिभूत होकर इन कहानियों में अंकित परिवार, पारिवारिक विघटन का मार्ग सशक्त करते हैं तथा एकाकी परिवारों में परिवर्तित हो जाते हैं परन्तु एकाकी परिवार भी

सदैव सुखद न रह कर कहीं- कहीं उलझन भरे प्रतीत होते हैं । एक ओर पत्नी चाहती है कि पति घर के कार्यों में हाथ बंटाये, परन्तु जब पति घर के कार्य करता है तब वह मना करती है । इसी उलझन से भरी कहानी 'उलझन' (महीपसिंह) है । इसकी पत्नी सुरजीत एक ओर परिवार के कार्यों में पति के सहयोग की अपेक्षा करती है तो दूसरी ओर पति को घर का कार्य करते देख दु:खी होती है । स्वयं को उसका दोषी मानती है ।[२२] सुरजीत की उलझन का कारण उसके परम्परागत संस्कार, पति के प्रति सम्मान भावना आदि के साथ नये परिवेश की आवश्यकता का द्वन्द्व है, जो एक सहज मनो-विश्लेषण के साथ बखूबी उभर कर आया है । अनेक कहानियों में वैयक्तिकता की प्रधानता पर पीढ़ी संघर्ष आधारित दिखाया गया है । ज्ञानरंजन की 'सम्बंध' तथा पानू खोलिया की 'रिश्ते' कहानियों में भी ऐसा सामाजिक बदलाव अंकित है जिसमें पारिवारिक आत्मीयता का बोध समाप्त प्राय दिखाया गया है । इस सन्दर्भ में 'राजा निरबंसिया' (कमलेश्वर)[२३] का उल्लेख करना भी आवश्यक है । इसमें एक ओर राजा निरबंसिया की कहानी सुनाती मां संयुक्त परिवार की प्रथा स्थापित करती है तो जगपति व चन्दा नयी पीढ़ी के रूप में नये जीवन की ओर अग्रसर होते हैं । एक ओर चन्दा परंपरागत संस्कार के प्रति आस्थावान पतिव्रता है तो दूसरी ओर उसका बदलता हुआ आधुनिक स्वरूप भी है । वह अपने पति की जिन्दगी बचाने के लिए बचन सिंह के प्रति समर्पित होती है, जहाँ उसकी आर्थिक विवशता तथा पति की जिन्दगी व नौकरी का प्रश्न है । जगपति एक ओर अपने पुरुषत्व की चुनौती सहन न कर आत्म-हत्या करता है परन्तु दूसरी ओर कानूनी कारवाही से पत्नी को बचाने के

लिए अपने पत्र में चन्दा व उसके पुत्र को अपना मानकर दूसरे के घर बैठने का विचार करने वाली चन्दा को अपने घर बुलाना चाहता है । उसका कहना है कि उसकी लाश तब तक न जलायी जाये जब तक चन्दा बच्चे को लेकर न आ जाय तथा पुत्र से ही आग लगवायी जाय । इस प्रकार वह बचन सिंह के पुत्र को पूर्ण रूप से अपना लेता है ।

अत: समग्रता निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि उपरि-निर्दिष्ट कहानियों में एक ओर परम्परागत मूल्यों की एक सीमा तक स्थापना है तो दूसरी ओर व्यक्तियों का बदलता हुआ दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होता है । पुरानी तथा नयी पीढ़ी में इस प्रकार तनाव की स्थिति बढ़ती जा रही है कि नयी पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी एक अचल भीमकाय पुराने दरवाजे की तरह तैनात दिखाई देती है । उसे लगता है कि उससे टकराकर हम कहीं दयनीय व कुंठित बन सकते हैं तो कहीं अपने में सफल हो सकते हैं । व्यक्ति का अहं इतना हो गया है कि वह अपने जीवन में पिता, पत्नी या अन्य किसी का हस्तक्षेप स्वीकारने को तैयार नहीं होता । कहीं पिता को लगता है कि नयी पीढ़ी उनकी उपेक्षा कर रही है, वे बिरादरी बाहर होते जा रहे हैं तो कहीं बदलते जीवन के आयामों में नये मूल्यों की स्थापना के साथ-साथ परम्परागत नारी जीवन विशेष रूप से परिवर्तित होता जा रहा है ।[२४] नारी के रूप आज किस प्रकार बदल रहे हैं इन पर स्वतंत्र रूप से विचार कर लेना यहाँ आवश्यक प्रतीत होता है ।

४- आधुनिक नारी का बदलता ह जीवन :

तृतीय अध्याय के विवेचन में लक्ष्य किया जा चुका है कि शिक्षित

आधुनिक नारी की स्वच्छन्द चेतना व आत्म-सजगता के माध्यम से पारिवारिक सम्बंधों में पर्याप्त अंतर आ रहा है । इसके कारण पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका का स्वतंत्र अस्तित्व, दाम्पत्य जीवन में विघटन, नारी की आर्थिक स्वतंत्रता आदि तथ्य परिवारों को प्रभावित ही नहीं करते अपितु उनमें नये जीवन-आयामों और नये जीवन-मूल्यों का सूत्रपात करते हैं । आलोच्य काल की कहानियों में ये विविध जीवन पक्ष किस प्रकार अंकित हुए हैं, इसे यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है ।

नारी से सम्बंधित आज के पारिवारिक जीवन का सर्वाधिक उल्लेखनीय तथ्य नारी की आर्थिक स्वतंत्रता तथा दाम्पत्य के विघटन का है । यह दृष्टिगत किया जा चुका है कि संयुक्त परिवार विघटन के पश्चात् एकाकी परिवारों में परिणत हुए जिनमें पति-पत्नी व उनके बच्चों का समावेश रहता है । लेकिन आज अस्तित्व -बोध तथा अति वैयक्तिकता ने ऐसे एकाकी परिवार में भी विघटन की स्थिति उत्पन्न कर दी है । नारी निजी अस्तित्व की सम्यक् प्रतिष्ठा के रहने तक ही विवाह को आवश्यक समझती है ।वह एक ओर पति को उसके परम्परागत रूप की अपेक्षाकृत एक जीवन साथी के रूप में स्वीकारती है तो दूसरी ओर पुरुष भी उसे मात्र भोग्या न मान कर आर्थिक रूप से सहयोगिनी के रूप में प्राप्त कर गौरवान्वित होता है । आज ऐसी नारियाँ आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखने के लिए अग्रसर हुई हैं । दूसरे शब्दों में वे घर से बाहर निकल कर कामकाजी महिला बनती जा रही हैं । कहीं- कहीं उनकी स्वतंत्र मनोवृत्ति व अहं की

चेतना इतनी प्रबल हो उठती है कि उसे पुरुषोचित अहं स्वीकार नहीं पाता। फलस्वरूप दोनों में अपने-अपने अहं के द्वारा शीतयुद्ध का सूत्रपात हो जाता है जो अन्त में दाम्पत्य जीवन को न मिलने वाले दो अलग- अलग किनारों के रूप में परिवर्तित कर देता है ।

उक्त सन्दर्भ में सर्वप्रथम ऐसी कहानी का विवेचन किया जाना उचित है, जिसमें अपने संस्कारों से नितान्त भिन्न परिवार से सम्बंध जोड़ने वाली नारी का आक्रोश तथा विद्रोह रूपायित हुआ है । नव विवाहिता बहू शीला अपने कालिज की सर्वश्रेष्ठ एथलीस्ट लड़की है, जो एक व्यापारी परिवार में आ जाती है । वहाँ उसकी खेलने की संपूर्ण प्रतिभा लुप्त होकर किस प्रकार घर के काम-काज में ही चुकने लगती है वह यह स्वयं समझ नहीं पाती । `कटाव` कहानी में नारी का माता-पिता की आज्ञा के अनुसार विवाह का प्रतिशोध तथा अपनी प्रतिभा को लुप्त होते देख अन्तर्विरोधों को सशक्त रूप से चित्रित किया गया है ।[२५] इसमें नारी की स्वतंत्र चेतना, आत्मसजगता तथा वैयक्तिकता की भावना का पथ प्रशस्त होता है । इसी कारण नारी आगे चल कर समस्त परंपरागत मान्यताओं के प्रति आवाज उठाती दृष्टिगोचर होती है ।

राजेन्द्र यादव की `टूटना` विद्रोह की स्थिति की कहानी है ,

जिसमें डिप्टी कमिश्नर मि० दीक्षित की पुत्री लीना समाज का विरोध कर मेधावी किशोर से प्रेम- विवाह करती है । एक ओर अभिजात्य संस्कारों में पली लीना तो दूसरी ओर मध्यवर्गीय किशोर, थोड़े ही समय में अपने-अपने पारिवारिक परिवेश एवं संस्कारों की भिन्नता के कारण दोनों में अनबन होने लगी । जिससे वे मन ही मन अच्छी तरह समझते थे । किशोर मि० दीक्षित के रूप में लीना को अप्रत्यक्ष रूप से प्रहार करता था ।लीना के जन्मदिन पर प्रो० मेहता द्वारा दिये गये साड़ी-ब्लाउज के उपहार से उसका अत्यन्त क्रुद्ध हो जाना दाम्पत्य जीवन की टूटन का आधार बनता है। तदनंतर आठ वर्ष के एकाकी जीवन के बाद वह एकाएक लीना का पत्र प्राप्त कर सोचता है`----उस जिद्दी दम्भी स्वाभिमानी औरत ने कितनी मुश्किल से अपने को यह लिखने पर तैयार किया होगा -----`कान्ट वी फारगैट दी पास्ट ` --- आज भी याद है --- लीना के जन्मदिन पर मि० मेहता ने साड़ी ब्लाउज लाकर दिये थे --। और उसने कहा था---- बस साड़ी ब्लाउज ही दिये ? और कपड़े नहीं दिये ---।` लीना न चीखी न चिल्लायी बस गिरती हुई सख्त आवाज में बोली----देखो किशोर आज से बल्कि इसी क्षण से हम लोग साथ नहीं रहेंगे । मैं भी सोच रही थी तुमसे बात कर ली जाये । तुम न अन्धे हो न बहरे, तुम सिर्फ इन्फीरियारिटी काम्प्लेक्स के मारे हुए हो ---।`[२६] इधर किशोर बिना कुछ कहे घर से जाता है तो उधर लीना घर पर ताला लगा कर चली जाती है । इस प्रकार प्रेम-विवाह वाले इस सुखद जीवन में सम्बंध विच्छेद रूपी अर्द्धविराम आ जाता है ।

उपरिनिर्दिष्ट अहं भावना के पूर्ण दर्शन मन्नू भंडारी कृत `त्रिशंकु` कहानी में भी होते हैं , जिसमें मम्मी ने नाना का पूरा- पूरा विरोध करके प्रेम-विवाह किया है क्योंकि वह कार्यशीला थी । मम्मी----आत्मनिर्भर स्वतंत्र तथा स्वयं अपने निर्णय लेने में पूर्ण सक्षम थी । विवाह के बाद भी वह घर व बाहर की दोहरी जिन्दगी पूर्ण रूप से निभाती है । उसकी एक मात्र पुत्री युवा हो रही है जो स्वतंत्र रूप से लड़कों से मिलती- जुलती है । वह पुत्री के सहपाठियों को यदा-कदा घर बुला कर उन्हें आपस में मिलने की पूर्ण छूट देती है परन्तु जब उसे लगता है कि पुत्री युवा मित्रों के साथ नाचती,गाती व प्रेम-पत्रों का आदान-प्रदान करती है तब वह परंपरा-सेवी भारतीय नारी बनकर पुत्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगा देती है । दूसरी ओर पुत्री और लड़कों को निरुत्साहित व मुंह मुरझा हुआ देखकर फिर से लड़कों को घर बुलाती है । इस प्रकार परम्परागत व नवीन दोनों मूल्यों व जीवन व्यवहारों का दर्शन इस कहानी में होता है । पुत्री को भी लगता है कि कभी यह मम्मी बन जाती है तब कभी नाना ।[२७]

इसी प्रकार की शिक्षित नारी के अहं से सम्बंधित मोहन राकेश कृत `एक और जिन्दगी` कहानी है । यहाँ आर्थिक रूप से सम्पन्न बीना के व्यवहार ने दाम्पत्य जीवन में खतरनाक मोड़ ला दिया ।`----विवाह के कुछ महीनों के बाद ही पति-पत्नी अलग-अलग रहने लगे थे । विवाह के साथ जो सूत्र जुड़ना चाहिए था वह जुड़ नहीं सका था । दोनों अलग- अलग जगह काम करते थे और अपना-अपना स्वतंत्र ताना-बाना बुन कर जी रहे थे । लोकाचार

के नाते साल छह महीने में कभी एक बार मिल लिया करते थे। वह लोकाचार ही इस बच्चे को संसार में ले आया था---- बच्चे की पहली वर्षगाँठ थी उस दिन---वही उनके जीवन की सबसे बड़ी गाँठ बन गयी थी ----बीना ने लिखा था कि वह बच्चे को लेकर अपने पिता के घर लखनऊ जा रही है। वहीं पर बच्चे की जन्म दिन की पार्टी करेगी।[२८] इस प्रकार पुरुषत्व को दी गयी चुनौती के कारण पति-पत्नी के लौकाचार वाले सम्बंध भी तलाक में परिवर्तित हो गये। इधर प्रकाश बच्चे को विस्मृत नहीं कर पाया था और पलाश से मिलता रहता था परन्तु बीना के द्वारा निरन्तर अपमान व एकाकी-पन से ऊब कर इस अभाव की पूर्ति किसी ऐसी लड़की से करना चाहता है जो हर दृष्टि में बीना के विपरीत हो। अब वह एक ऐसी लड़की चाहता था जो हर तरह से उस पर निर्भर करे, जिसकी कमजोरियां एक पुरुष के आश्रय की अपेक्षा रखती हों।[२९]

अत: कहा जा सकता है कि ऐसी कहानियों में एकाकी परिवार में विघटन का कारण पति-पत्नी का अहं व स्वाभिमान दिखाया गया है, जिसमें पुरुष चाहता है कि उसकी पत्नी-सदैव उसकी आज्ञाकारिणी बनी रहे और विरोध न करे, जबकि शिक्षित तथा आर्थिक रूप से स्वतंत्र नारी पूर्ण रूप से विरोध करती है। इसी प्रकार की मन: स्थितियों की कहानी 'लोग' (महीप सिंह) है, जहाँ नीला और युवती दोनों नारियों की विचार-धारा लगभग एक जैसी है उनके वैयक्तिक अहं के कारण ही परिवार में द्वन्द्व उत्पन्न होता है और दाम्पत्य जीवन भी बिखरता है। एक ओर इनका

विचार है कि ' औरत को सहारे की जरूरत होती है' और नीला बिल्लू को अपने पास रखती है परन्तु दूसरी ओर वे पुरुष की नौकरानी बन कर उसकी दासता स्वीकार नहीं करना चाहती'--- मुझे अपने लिए ज्यादा चाहिए ही क्या ? इस छोटी सी नौकरी से गुजारा हो ही जाता है । स्कूल के बच्चों में मन लग जाता है । जैसे-तैसे दिन कट जायेंगे । अब मैं उनके पैरों पड़ने से तो रही ---।'[३०]

प्रत्येक जगह विशेषतया नारी का रूप परिवर्तित ही दिखायी देता है । वह इतनी जल्दी खिसक जाती या परिवर्तित होती रहती है कि पता ही नहीं चलता जो इसी लेखक की 'गन्ध' कहानी में भी देखा जा सकता है । '----मुझे पता है यह दर्जा तुम मुझे नहीं दे सकते । खैर तुम्हारी मजबूरी मैं समझती हूँ । पर अनिल की क्या मजबूरी थी ? श्याम और सुबोध की क्या मजबूरियाँ थीं ? सब मेरी जिन्दगी में आए--- सब पति बनने का मौका ढूंढते रहे पर जब मुझे पत्नी का दर्जा देने की बात आयी तो कान दबा कर खिसक गये----' तत्पश्चात इसी शान्ता का विवाह नरेश के साथ एक रात बिताने पर अन्य व्यक्ति के साथ इतनी शीघ्रता से सम्पन्न हो गया कि वह स्वयं भी नहीं जान पायी ।[३१] महीप सिंह कृत 'सीधी रेखाओं के वृत्त' कहानी की सवि भी इसी स्थिति की द्योतक है । अत: इन कहानियों को देखने पर लगता है जैसे उनमें नयी पीढ़ी- पुरानी पीढ़ी के मध्य अब कोई संपर्क नहीं रह गया है ।[३२] परिणाम स्वरूप अपने को व्यवस्थित रखने के लिए पुरानी पीढ़ी के व्यक्तियों के विचार हैं कि उनकी दृष्टि कमजोर हो गयी है ।उन्हें

अब अधिक नम्बर का चश्मा लगाना चाहिए जिससे आसपास की वस्तुएँ अच्छी तरह दिखायी दे सकें ।[33] यह व्यंग्यात्मक कथन इस बात का संकेत देता है कि प्राचीन जीवन दृष्टि यथार्थ सन्दर्भों में अप्रासंगिक किंवा क्षीण हो चुकी है । प्रत्येक जगह उन्हें परम्परागत सम्बंधों के टूटने की स्थिति, बदलते नारी स्वरूप व जीवन के नये आयाम दृष्टिगोचर होते हैं ।

अहं व आर्थिक स्वतंत्रता के कारण कहीं नारी को एकाकीपन खलता है तो कहीं पुरुष को । नारी के इस अकेलेपन से जनित खामोशी का बीड़ा उठाने का श्रेय उषा प्रियम्बदा कृत 'दृष्टिदोष' कहानी को मिलता है , जिसमें एक शिक्षित नारी रूढ़ियों से मुक्त होकर नये स्वतंत्र परिवेश में जीवन यापन करना चाहती है । चन्दा के अभिजात्य संस्कार तथा साम्य के मध्य-वर्गीय आचार-व्यवहारों की भिन्नता ही पति-पत्नी के मध्य दूरियाँ बना देते हैं । चन्दा आधुनिक पत्नी है जिसे सास, नन्द तथा साम्ब (पति) के व्यवहार परंपरागत व दम घोंटने वाले लगते हैं । वह पति व घर को अपने अनुरूप चलाना चाहती है । असफल होने पर उसे पूरे परिवार का विरोध सहन करना पड़ता है । फलत: घर छोड़ कर वह अपने भाई के पास जाकर नौकरी करती है । साम्ब का स्नेह अपनी पत्नी व सन्तान के प्रति असीम है जिसके कारण वह सम्बंधों में दूरी आने पर भी अन्य नारी को अपनाने में असमर्थ रहता है जबकि चन्दा के साथ कार्य करनेवाली मधुर साम्ब के जीवन में आना चाहती है । जब चन्दा को मधुर के वार्तालाप द्वारा ज्ञात होता है कि उसके पति अपनी पत्नी को अत्यधिक चाहते हैं इस कारण उन्होंने मधुर की अवहेलना की है तब उसके हृदय में साम्ब के प्रति प्रेम उमड़ता है और साम्ब

चन्दा को अपनाकर जीवन सफल करता है । इधर चन्दा का अहं भी कम होकर उसका दृष्टिकोण बदल जाता है । यहाँ यह लक्ष्य कर लेना प्रासंगिक ही होगा कि 'एक और जिन्दगी' कहानी में अहम् पर आघात पड़ने पर पति- पत्नी परस्पर अलग हो जाते हैं किन्तु 'दृष्टिदोष' में अहम् की तुष्टि से वे पिघल कर पुन: एक दूसरे से जुड़ते हैं । अत: कहा जा सकता है कि साठोत्तर कहानियों में पारिवारिक विघटन के लिए वैयक्तिक स्वतंत्र चेतना तथा अहम् की तुष्टि को ही प्रधानता उत्तरदायी दिखाया गया है ।

अत: कहा जा सकता है कि पारिवारिक जीवन में दिन- प्रतिदिन नये दृष्टिकोण के कारण परिवर्तन आता जा रहा है । आज व्यक्ति का महत्व आर्थिक सम्पन्नता के आधार पर ही मूल्यांकित होता है । परिवार में पुरुष हो अथवा नारी उसे उसकी नौकरी, दूसरे शब्दों में आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता के कारण ही मान-सम्मान मिलता है । इस अर्थ-मुखी चेतना का दूसरा पक्ष भी है जो उसके व्यक्तित्व को पूर्णतया खंडित ही नहीं करता है अपितु जीवन में नीरसता एवं निरर्थकता का समावेश या संचार करता है , जिसे कतिपय - कहानियों में प्रस्तुत हुआ हम यहाँ दृष्टिगत कर रहे हैं । नारी के अर्थार्जन से उसके जीवन में क्या परिवर्तन आता है तथा पारिवारिक विघटन के रूप में यह समस्या किस प्रकार सहायक सिद्ध होती है से सम्बंधित विवेचन यहाँ अभीष्ट है ।

५-नारी का अर्थार्जन और विघटन के इतर आयाम :

यह ध्यातव्य है कि अर्थ प्रधान आधुनिक जीवन में जहाँ आर्थिक समस्या

नारी को विचलित करती है, वहीं वह उसे घर में सम्मान दिलाने में भी सहायक होती है । उसका कामकाजी होना कभी- कभी पारिवारिक सदस्यों की दायित्व-हीनता को प्रेरित करता है । पुरुषों द्वारा निजी दायित्व के प्रति उपेक्षा अथवा दायित्वहीनता के कारण पारिवारिक विघटन का विश्लेषण कतिपय कहानियों में मिलता है । इस सन्दर्भ में अन्विता अग्रवाल कृत 'रबर बैन्ड' कहानी यहाँ उल्लेखनीय है । परिवार में बहन को अर्थार्जन करते देख कर उसका भाई बीमार बाप तथा छोटे-भाई- बहन और मां का उत्तरदायित्व उस पर छोड़ कर विदेश चला जाता है । बेटी की कमाई न खाने की मान्यता आज खोखली बन कर कल्पना की वस्तु होती जा रही है ।[३४] यहाँ तक कि माता-पिता एक ओर गृहस्थी के बोझ उठाने व अर्थ के लोभ से नौकरी पेशा बेटी का विवाह भी सम्पन्न नहीं कराना चाहते ।[३५] पिता की स्वार्थपरता का दूसरा उदाहरण 'कील' शीर्षक कहानी में मिलता है जिसमें वृद्ध पिता को अपनी देखभाल के लिए पुत्री से अच्छी परिचारिका भी नहीं मिल पाती। इस कहानी के डैडी को डर है कि उनकी पुत्री मोना के विवाह पश्चात् उनकी देखभाल कौन करेगा । इस कारण वे उसका विवाह टालते जाते हैं और प्रत्येक वर को मोना के समक्ष अयोग्य घोषित करते हैं । जब सुरेश के लिए मोना अपनी स्वीकृति दे देती है तब डैडी की स्वार्थ प्रवृत्ति स्पष्ट दिखायी देती है ।---- कर्नल साहब, अगले साल यहाँ आना नसीब होगा या नहीं कौन जाने ? मोना बहुत सयानी हो गयी है । उसकी शादी अब जल्दी ही करनी है । फिर यह अपने घर चली जायेगी, मेरे साथ कौन आयेगा ---।'[३६] अनेक ऐसी नारियाँ भी इन कहानियों में चित्रित हैं जिनके लिए आजीविका अर्जन करना मानों अभिशाप बन गया है , और स्वार्थवृत्ति उन्हें न्याय नहीं देती । इस वर्ग में विधवा, परित्यक्ता,

कुमारी तथा असमर्थ पति की सहायता करने वाली पत्नी का चित्रण मिलता है ।[३७] कृष्णा बलदेव वैद की `त्रिकोण`, ममता कालिया की `अनिर्णय` तथा `पत्नी` इसी प्रकार के तथ्य की द्योतिका कहानियाँ हैं ।

उपर्युक्त स्थिति से सम्बंधित कुछ ऐसी कहानियाँ हैं जिनसे यह स्पष्ट है कि भाई की नौकरी छूटना तथा बहन का नौकरी करना परिवार के सम्बंधों में अत्यधिक परिवर्तन ला देता है । उषा प्रियम्वदा की `जिन्दगी और गुलाब के फूल` कहानी में बड़े भाई सुबोध की विवशता तथा मां व छोटी बहन वृन्दा की उसके प्रति उपेक्षा ही उसे परिवार से विरक्त करती है । वह नारी की सत्ता को अस्वीकार करना चाहता है किन्तु नौकरी छूटने के बाद निरन्तर अपमान सहते-सहते उसका व्यक्तित्व इतना टूट जाता है कि वह वृन्दा के समक्ष स्वयं को तुच्छ , असहाय व अपंग मानता है । धीरे- धीरे उसकी सारी चीजें वृन्दा के कमरे में जा चुकी थीं । वह सोचने लगा कि `---- आज मैं बेकार हूँ मुझसे नौकरों सा बरताव किया जाता है, लानत है ऐसी जिन्दगी पर-----।`[३८] उसके अवमूल्यन की स्थिति अत्यन्त गंभीर बन कर शोचनीय बन गयी थी जिसका मूल कारण उसका बेरोजगार तथा छोटी बहन का नौकरी पेशा होना है । वह इतना आत्मविघटित हो जाता है कि उसमें उसकी प्रेयसी शोभा, जो उसके जीवन में गुलाब के फूल की भाँति मधुर सपने लेकर आयी थी, नौकरी समाप्त होते ही न जाने कहाँ विलीन हो जाती है ।

परिवार के साथ-साथ नारी का अर्थार्जन दाम्पत्य जीवन के विघटन

यही स्थिति `एक समुद्र मी` (हिमांशु जोशी) कहानी में है जिसमें नायक बड़ा होकर वैयक्तिक विघटन के आक्रोश में जकड़ जाता है । तापस इतना व्यक्तिपरक हो गया है कि वह विदेश पलायन करना चाहता है , जिसका मूल कारण उसका अतीत व बचपन है`---जब वह छोटा था, उसके पिता की मृत्यु हो गयी थी । ---मां खूबसूरत थी, जवान,----इसका पाप अपनी छोटी बहन के साथ उसे भी भोगना पड़ा था ।---मां ने दूसरी शादी कर ली थी---एक रात वह दोनों का हाथ थामें किसी दूसरे के घर चली गयी थी---पिता को गुजरे एक वर्ष भी नहीं बीता था और मां के एक बच्चा हो गया था ----- यह प्रक्रिया फिर कई वर्षों तक चली और चलती रही थी ---एक दिन यहाँ तक वह पुराने पति ही नहीं पुराने बच्चों को भी भुला बैठी थी ---।`[४२] यहाँ तक कि तापस का विश्वास अब विवाह से हट गया था । वह काम व तुष्टि के लिए प्रेमिकाओं को बुलाता था उनके पास चला जाता था । विवाह बन्धन जैसे समस्त आचार-व्यवहार उसे झूठे तथा ऊपर से ओढ़े हुए लगते थे । लगभग यही स्थिति राजेन्द्र यादव कृत `अनुपस्थित सम्बोधन` कहानी में मिलती है । इसकी सीमा अपनी मां के तेज अंकल के साथ स्वतंत्र सम्बंध देख देखकर उनके प्रेमाचारों के कारण इतनी कुंठित हो जाती है कि अपने प्रेमी के साथ स्वतंत्र व सुखी जीवन की कल्पना में वह स्वयं को असमर्थ पाती है । अत: स्पष्ट है कि माता-पिता के अनैतिक सम्बंधों का बच्चों पर अत्याधिक प्रभाव पड़ता है, जो भिन्न-भिन्न रूपों में साठोत्तर कहानी में अंकित हुआ है ।

माता-पिता के सम्बंधों के कारण बच्चों में उभरी नयी समस्याएँ तथा हुं कुंठाएँ `पहचान` (मोहन राकेश) कहानी में भी चित्रित है । महेन्द्र सचदेव

का पुत्र शिवजीत सचदेव स्कूल में पढ़ता है । माता-पिता में सम्बंध-विच्छेद हो जाता है और शिवजीत मां के पास रहता है । जब मां पुनर्विवाह करके डॉ० हरदेव अवरोल के घर जाती है तब मानवात्मक लगाव के कारण शिवजीत को हॉस्टिल में नहीं भेज पाती और अपने पास ही रखती है । शिवजीत के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता जब उपस्थिति रजिस्टर से उसका नाम शिवजीत सचदेव पुकारा जाता है । उसे लगता है `--- जैसे भरी क्लास में नेकर उतार कर उसे नंगा खडा कर दिया हो ----`[४३] उसे अपना पितृत्व अनिर्णित लगता है । एक ओर उसके पिता महेन्द्र सचदेव उसे अपने साथ ले जाना चाहते थे तो दूसरी ओर यहाँ उसका सरनेम बदल दिया गया है । वह सोचता है वह क्या है ? सचदेव या अवरोल ? या दोनों नहीं --- पापा ? कौन ? महेन्द्र सचदेव या ---डॉ० हरदेव अवरोल ----`[४४] पति-पत्नी के विच्छेद से पारिवारिक व्यवस्था में हुआ नया परिवर्तन बच्चों की मानसिकता पर गहरा आघात पहुँचाता है , यह कहानी उसका सशक्त निदर्शन है ।

कमलेश्वर कृत `तलाश` कहानी में यह स्थिति नितान्त भिन्न रूप से दृष्टिगोचर होती है । चालीस वर्षीय `मम्मी` आठ वर्ष से वैधव्य जीवन का पालन विक्षित कर रही है । कालिज की महिला प्रिंसिपल के रूप में वह कब अपने अन्तर की पुकार पर पति की मृत्यु के आठ वर्ष बाद भी अनायास अपने आफिस के एक कर्मचारी के प्रति समर्पित हो जाती है, इसे स्वयं नहीं समझ पाती । कॉलिज की लैब का सामान खरीदने के बहाने उसी कर्मचारी के साथ दो दिन की आउटिंग पर चली जाती है । एक ओर उसकी पुत्री सुमी अपनी मम्मी का यह सम्बंध स्वीकार नहीं करना चाहती तथा परंपरागत दृष्टिकोण को अपनाते हुए

विचार करती है तो दूसरी ओर मां को घर पर पूर्ण सुविधा तथा स्वतंत्रता देकर स्वयं हॉस्टिल में रहने चली जाती है । उसका विचार है कि पिता विहीन अकेली मां की सुविधा व सुख का ध्यान उसे ही रखना है । उनके सुख में बाधक बनना उचित नहीं है । इस प्रकार आधुनिक दृष्टिकोण अपनाती मां- बेटी - परिवार से अलग रहने को विवश हो जाती हैं ।

एतद्विषयक विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि कहीं नारी का अहं दाम्पत्य जीवन के सूत्र को तोड़ रहा है, तो कहीं आर्थिक समस्या दाम्पत्य जीवन को नीरस बना रही है । तत्सम्बंधी बच्चों के सम्बंधों ही नहीं अपितु समग्र पारिवारिक सम्बंधों में बदलाव आ रहा है ।[४५] संक्षेप में कहा जा सकता है कि कहानियों में अभिव्यक्त सम्बंधों के परंपरागत रूप में अब इतना अधिक परिवर्तन आ गया है कि अहं तथा वैयक्तिकता से पारिवारिक सम्बंध अब पहले जैसे न रह कर शेष होते हुए दृष्टिगोचर होते हैं जिससे पारिवारिक सम्बंध खंडित होते जा रहे हैं ।[४६] परिवार में पति-पत्नी, भाई- बहन, माता-पिता तथा प्रेमी-प्रेमिका आदि के सम्बंध परंपरागत रूप में न रहकर नये आयामों व सम्बंधों में परिवर्तित हो रहे या होने की स्थिति में आ रहे हैं । यही परिवर्तन अनेक कहानियों का विषय बन रहा है । जहाँ कहीं नारी अनेक व्यक्तियों के मध्य अपनी गन्ध फैलाती है तो कहीं मात्र अर्थार्जन के लिए ही बनी प्रतीत होती है ।[४७] पारिवारिक जीवन में बदलाव लाने के लिए एक सशक्त पहलू प्रेम तथा शारीरिक सम्बंध है जिन पर यहाँ विचार किया जा रहा है ।

(ख) बदलते प्रेम व शारीरिक सम्बंध :

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत यह विस्तार से निर्दिष्ट किया जा चुका

है कि स्त्री- पुरुष के प्राकृतिक आकर्षण को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। यह सार्वभौमिक सत्य है कि वे सदा से एक दूसरे के पूरक रहे हैं तथा भविष्य में भी रहेंगे । यह बात अलग है कि उनके दृष्टिकोण व मान्यताओं में अन्तर आता रहता है । प्रत्येक युग की अपनी जीवन दृष्टि व नैतिक बन्धन होते हैं जिनके अनुसार व्यक्तियों के शारीरिक सम्बंध नियंत्रित किये जाते हैं । आज परंपरागत नैतिक बन्धन शिथिल होकर समाप्त होते जा रहे हैं । उन्मुक्त काम-सम्बंध प्राय: विकृत रूप धारण करते प्रतीत होते हैं, जिनका कारण किसी सीमा तक आज के युग में बौद्धिकता, तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकसित होना माना जा सकता है । मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकसित होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति के स्वतंत्र अस्तित्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता । वह जैसा चाहता है अपने व्यक्तित्व में परिवर्तन ले आता है ।

पुरुष और नारी संसार के दो प्रमुख घटकों के रूप में अपनी- अपनी विशेषताओं तथा विभिन्नताओं के साथ जीवन का ताना-बाना बुनते हैं । परिवार में नारी की स्थिति उसकी धुरी के समान है । वह दो रूपों में आज प्रत्येक जगह व्याप्त है - एक उसका निजी अहं-बोध तथा दूसरा उसका भोग्या रूप । उसका अहं किस प्रकार से परिवार के स्वरूप में परिवर्तन लाता है, इससे सम्बंधित कहानियों से प्राप्त निष्कर्षों को पूर्ववर्ती पृष्ठों में निर्दिष्ट किया जा चुका है। अत: नारी के दूसरे रूप पर यहां विचार किया जा रहा है । बदलते हुए प्रेम के रूपों तथा शारीरिक सम्बंधों के रूप परिवर्तन का विवेचन उसमें अवस्थित दो प्रधान पक्षों के आधार पर किया जा सकता है ।

१- प्रेम सम्बंध तथा तज्जन्य परिवेश में बदलाव ।

२- शारीरिक सम्बंध तथा तज्जन्य परिवेश में बदलाव ।

१-प्रेम सम्बंध तथा तज्जन्य परिवेश में बदलाव :

आज के सन्दर्भों में प्रेम का अर्थ दूसरे के अनुकूल बन कर अपनी स्वतंत्रता खोना अथवा दूसरे को अपने अनुकूल बना कर उसकी निजता का क्रमशः विलोपन माना जाता है।[४८] आलोच्य काल में कहानियों में प्रेम कहीं- कहीं तो मात्र दिखावे के रूप में ही दृष्टिगोचर होता है । इसमें नारी अनेक स्थानों पर प्रेम की लिप्सा व आकांक्षा से ओतप्रोत होकर सम्बंध स्थापित करती हुई किस प्रकार इधर-उधर भटक रही है वह स्वयं नहीं समझ पाती । गन्तव्य तथा सुख की खोज ही उसे भरमाती रहती है । यहाँ तक कि परंपरागत बन्धनों से स्वतंत्र होने पर भी वह जीवन-साथी चुनने का निर्णय भी स्वयं नहीं ले पाती और प्रत्येक स्थिति को अपनी मान कर अनिर्णित रह जाती है । 'यही सच है' (मन्नू भंडारी) कहानी की दीपा इसी स्थिति की शिकार है । किन्हीं दिनों दीपा जो निशीथ पर पूर्णतया आकृष्ट तथा अनुरक्त थी, वही दूसरे शहर में रहने पर निशीथ को विस्मृत कर किस प्रकार संजय के प्रेम में खो जाती है स्वयं नहीं समझ पाती । संयोगवश इण्टरव्यू के लिए बाहर जाने पर उसकी निशीथ से पुनः भेंट होती है । वहाँ उसका मन निशीथ को संपूर्ण प्यार देने व उसकी ही हो जाने का होता है। परन्तु निशीथ के इन दो-तीन दिनों के सान्निध्य के पश्चात् जब वह पुनः संजय के पास आती है तो उसे लगता है कि संजय ही अपना है बाकी सब भ्रम है । इस प्रकार इस कहानी में क्षण की अनुभूति ही सत्य प्रतीत होती है वह संजय हो या निशीथ । सामीप्य की अनुभूति दीपा को जकड़ लेती है और प्रेम शाश्वत न रहकर क्षणिक बन जाता है जिससे क्या कहूँ ? क्या न कहूँ ? का चयन ही जटिल

समस्या बन जाता है । ऐसी स्थिति में उसे लगता है `---प्रथम प्रेम ही सच्चा होता है बाद में किया गया प्रेम तो अपने को भूलने का भरमाने का प्रयास मात्र होता है ।---- जबकि दूसरे प्रेम का--- यह स्पर्श, यह सुख यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था ।[४६] ऐसी स्थिति में प्रेम स्थूल शरीरी व क्षणिक बन जाता है और व्यक्ति परिस्थितियों के अनुरूप भिन्न-भिन्न व्यवहार करता दिखाई देता है ।

उक्त स्थिति की शिकार एवं प्रेम के बदलते आयामों में भटकती नारी `शायद हाँ, शायद नहीं` (निरुपमा सेवती) की कहानी में भी है । इसकी तरला आधुनिक है जो प्रेम की लालसा में स्वरूप व निखिल के मध्य डोलती है । वह निखिल से प्रेम करती है परन्तु उसकी नौकरी छोटी होने के कारण उससे विवाह नहीं करना चाहती, बस प्रेम करती है । स्वरूप वैभव शाली सम्पन्न व्यक्ति है, परंतु विवाहित है वह भी अपनी बोरियत कम करने तथा नये स्वाद लेने के लिए तरला जैसी नारी की आवश्यकता का अनुभव करता है । तरला निखिल के व्यक्तित्व के प्रति आकृष्ट है तथा स्वरूप का वैभव उसे लुभाता है । वह किसी एक के प्रति समर्पित नहीं हो पाती और दोनों के मध्य लटकी रहती है । `हाँ` और `नहीं` का निर्णय नहीं कर पाती । एक ओर निखिल के साथ रहती व चलचित्र देखती है तो दूसरी ओर घंटे भर में स्वरूप से दो बार फोन पर बात भी कर लेती है । इधर स्वरूप उसे कैंडल लाइट डिनर में ले जाने के लिए० बाद पाँचवीं मंजिल पर कमरे में उसका शीलभंग करने का प्रयास करता है । तरला भाग कर निखिल के पास आ जाती है तब यही भावुकता दूसरे स्वार्थ से लिपटे यथार्थ

रूप में सामने आती है यहाँ तक कि भावी पत्नी के अवैध सम्बंध को निखिल स्वार्थ की दृष्टि से देखकर मानने को विवश हो जाता है और कहता है`----स्वरूप से झगड़ क्यों पड़ी ? इतना फायदा हो रहा था---, स्वरूप से बड़ी नौकरी झाड़ ही लेती --- और जब कुछ महीनों बाद सर्विस पक्की हो जाये तब मत पूछना उन्हें । मैं तो तुमसे विवाह करूँगा ही -----।`[५०] इस प्रकार स्पष्ट है कि इन कहानियों में कहीं प्रेम को स्वार्थ पूर्ति का साधन बनाया गया है, कहीं वासना की तुष्टि का, तो कहीं इसे निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति और अस्तित्व-उन्मीलन के लिए भी अनिवार्य माना गया है ।[५१]

उपर्युक्त प्रकार की स्थितियाँ पारिवारिक जीवन व मानव के व्यवहारों में निरंतर परिवर्तन ला रही हैं जिसमें प्रेमी- प्रेमिका एक दूसरे के विषय में - निश्चित रूप से जानते हैं कि उन दोनों के-से के सम्बंध दूसरों से भी हैं फिर भी मिलने पर वे सहज व्यवहार करते हैं और शंका का द्वीप समाप्त होता प्रतीत होता है । `उजाले के उल्लू` (महीप सिंह) कहानी का कुलदीप व तोष भी इसी प्रकार के प्रेमी- प्रेमिका हैं । बदलते सम्बन्धों व पारिवारिक जीवन के व्यवहारों के परिवर्तन के रूप में इसी लेखक की `घिरे हुए चाण` कहानी भी है । इसमें दिलीप अनेक सम्बंध स्थापित करती अपनी पत्नी मोहिनी के विषय में सोचता है`---- वह रेडियो स्टेशन के कारीडोर से मित्तल के साथ खिलखिलाती हुई निकल रही है ---वह लोक जीवन के कार्यालय में संपादक की केबिन में बैठी है -------- वह तेरह नम्बर की बस से आ रही है ----- दिलीप को लगता है वह उसकी पत्नी नहीं है क्योंकि मित्तल, सम्पादक, उसकी---उसकी----ये

सभी आँखें उसे वहीं चिपकी नजर आती हैं ।[५२] अत: कहा जा सकता है कि आज के बदलते परिवेश में पति-पत्नी के सम्बंध प्राय: अन्यत्र मिल जाते हैं । जिसे परिवेश सहज रूप से स्वीकार भी कर लेता है । पारिवारिक जीवन में परिवर्तन आना स्वाभाविक बन जाता है । एक ओर प्रेम की खोज में नारी इधर-उधर भटक रही है तो दूसरी ओर पति या परिवार के अन्य सदस्य नारी के अन्यत्र सम्बंध किसी सीमा तक स्वीकार कर लेते हैं । उनकी दृष्टि में प्रत्येक स्थिति पाप बोध या अनौचित्य बोध से रहित सहज व आवश्यक ही लगती है।

यह दृष्टिगत किया जा चुका है कि स्त्री- पुरुषों में विषमलिंगी आकर्षण प्रकृतिजन्य है । प्रेम की अधिकता ही व्यक्ति को कहीं- कहीं शारीरिक सम्बंधों तक पहुँचा देती है और उसकी परिणति सहज ही विवाह के रूप में होने लगती है । प्रेम मात्र क्षण भर का साथ रहना या निकटता किसी भी कारण से हो सकता है । 'अपरिचित' (मोहन राकेश) कहानी इस दृष्टि से उल्लेखनीय है । इसकी महिला दीशी की पत्नी अपने तन का अंतिम आभूषण तक बेच कर पति को उसकी इच्छापूर्ति के लिए विदेश भेज कर स्वयं अपनी तीन माह की बच्ची के साथ रेल यात्रा कर रही है । उसके पास यही बच्ची एक मात्र पूंजी हैं । अपरिचित सहयात्री का सानिध्य अनायास उसमें अन्तर्द्वन्द्व उपस्थित करके अपरिचित के प्रति उसे आकृष्ट कर देता है और वह अनजाने में अपने पति की तुलना उस सहयात्री के, अनिष्ट होने की आशंका से वह सिहरती रहती है । '------ उसके चेहरे पर मुर्दनी छा जाती है साँस जल्दी-जल्दी चलने लगती है ----मैं कितनी मनहूस हूँ, अभी मेरी वजह से आपको कुछ हो जाता ----मैं हूँ ही ऐसी, जिन्दगी में हर एक को दु:ख ही दिया है--- अगर कहीं आप न चढ़ पाते---।'[५३]

इस प्रेम की पूर्ण अभिव्यक्ति डिब्बे से उतरने से पहले सोये हुए उसी सहयात्री को ठंडक से बचाने के लिए कम्बल रजाई के साथ मिला कर ठीक से उढ़ा देने में होती है ।

बदलते प्रेम-सम्बंध, पति-पत्नी के सम्बंध तथा उनके मध्य तृतीय व चतुर्थ व्यक्ति की कल्पना अधिकांशत: दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में प्रस्तुत हुई है । पति-पत्नी का तनाव व दूसरे प्रेमी से प्रेम की अभिव्यक्ति 'शेष-अशेष' (दीप्ति खंडेलवाल) कहानी में हुई है । इसमें शचि के चरित्र को सुलझाते हुए और अधिक उलझा दिया है । शचि अपने पति व प्रेमी के मध्य उलझ कर रह जाती है । पति-पत्नी के सम्बंध इतने शिथिल हो चुके हैं कि शचि को यह एक व्यर्थ का बंधन मात्र लगता है । वह मनु से अनाम सम्बंध रखना चाहती है । मनु उस सम्बंध को नाम देना चाहता है, जिसका यथार्थ की धरती से कोई लगाव नहीं है ।[५४] इसी लेखिका की 'एक पारी पुरवैया' कहानी का ताना- बाना पति-पत्नी के टूटते प्रेम सम्बंधों पर आधारित है । सुधा का पति सुरेश एक भावहीन व्यक्ति है जो पत्नी की कोमल, सूक्ष्म भावनाओं को समझने में असमर्थ रहता है । इस प्रकार पति-पत्नी साथ रहते हुए भी दूर होते जाते हैं । इस दूरी की रिक्तता सुधा चतुर्थ व्यक्ति विजय के द्वारा पूरी करना चाहती है जो उसे अमित के अनुरूप लगता है, जिससे सुधा ने विवाह पूर्व प्रेम किया था परन्तु उसका सुधा से विवाह टल गया । इधर सुधा के दूर के रिश्ते का देवर उसके घर कुछ दिन के लिए पढ़ने आता है । सुधा को उस विजय में अमित के चेहरे का भान होता है यहाँ तक कि वह पति के सानिध्य में भी अमित की स्मृतियों में खोकर विजय को देखती रहती है । इधर नारी का प्राप्य उसे पति से न मिलने

के कारण वह बिजू के प्रति समर्पित हो जाती है, बाद में उसे लगता है कि वह बिज्जू से भी छली गयी है जो उसके पत्रों का उत्तर नहीं देता ।[५५] इस प्रकार प्रेम की परिणति तीसरे व्यक्ति की कल्पना करती हुई चतुर्थ व्यक्ति से सम्बंध स्थापित करने में होती है तथा पति-पत्नी साथ रहते हुए भी दूर व अजनबी से बनते जाते हैं । `एक पारो पुरवैया` कहानी की भाँति `देह की सीता` कहानी में डॉ० शालिनी मेजर रंजीत की पत्नी है तथा मेजर सहाय से अतिरिक्त सम्बंध रखती है । उसका विचार है कि वह अपने पति को छल नहीं रही वरन् `---- वह रंजीत के प्रति समर्पित है, किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि वह मेजर सहाय जैसे विशिष्ट पुरुषों के नैकट्य की तृप्ति से वंचित रहे । पति का स्वत्व रंजीत का है ---केवल रंजीत का । स्वत्व को एकाधिकार मानने की भूल न उन्होंने की है, न रंजीत ने । वे एक दूसरे के साथी हैं ।[५६] अतः स्पष्ट है कि परंपरागत पारिवारिक जीवन आयाम आज नयी जीवन दृष्टि से ओत-प्रोत होकर नितान्त भिन्न हो गये हैं और पति-पत्नी अपने मध्य तीसरे व्यक्ति को पाकर उसके प्रति घृणा भाव नहीं रखते । नारी पति का सानिध्य तथा प्रेमी की निकटता के मध्य जीती है और पति अपने स्वाभिमान को बरकरार रखकर इस सम्बंध का विरोध नहीं करता ।

उपर्युक्त सम्बंधों तथा जीवन के आयामों में परिवर्तन का कारण कहीं-कहीं मात्र प्रशंसा होती है, क्योंकि आज व्यक्ति अपने अहं को तुष्ट करना चाहता है । यह एक ऐसी नयी मानसिकता बनती जा रही है जिसका अभाव कहीं-कहीं परिवारों में विघटन तक ला देता है । `मोह` (दीप्ति खंडेलवाल) कहानी इस दृष्टि से उल्लेखनीय है । सवि को अपने पति सुदीप से शिकायत है कि वे कभी

उसकी प्रशंसा नहीं करते । न चाय बनाने के अन्दाज की, न साड़ी की, न ही कमी उसे अपने हाथ से कुछ लेकर देते हैं । इसके विपरीत आशीष उसकी प्रत्येक बात की प्रशंसा करता है । आशीष विवाहित है फिर भी सवि का फोटो अपने पर्स में रखता है । इधर सवि को लगता है आशीष वैसा ही है जिसकी उसे आवश्यकता है । उसे आशीष में वह गरिमा दिखायी देती है जो उसे विश्वास दिलाती है । दूसरी ओर सुदीप की सरलता कालान्तर में उसका विश्वास खो देती है । वह मन की इस रिक्तता को आशीष के पत्रों के द्वारा भरने का प्रयत्न करती है। आशीष के पत्रों के कारण ही एक बार सुदीप के मन में शंका का द्वीप प्रज्ज्वलित होता है और वह पत्र फाड़ कर फैंक देता है । इधर सवि आधुनिक जीवन की वास्तविकता को अपनाकर आशीष के प्रति अत्यधिक मोह में बंध जाती है जिसका प्रभाव पारिवारिक जीवन के आयामों पर प्रत्यक्ष रूप में पड़ कर दाम्पत्य सम्बंधों में विघटन की स्थिति ला देता है ।

२- शारीरिक सम्बंध तथा तज्जन्य परिवेश में बदलाव :

प्रेम तथा विवाह ही व्यक्ति को शारीरिक सम्बंधों तक पहुँचाने में सहायक होते हैं । ये पारिवारिक जीवन को भी पूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं । द्वितीय अध्याय में निर्दिष्ट किया गया है कि शारीरिक सम्बंध कामसम्बंध तथा काम वासना क्रमशः इच्छा व भूख के सन्दर्भ में प्रयुक्त होते हैं । अतः सर्वप्रथम काम सम्बंधों को ध्यान में रखकर कहानियों का विवेचन यहाँ किया जा रहा है । प्रेम और विवाह के बदलते रूप रजनी और मृणालिनी के माध्यम से 'आत्मघात' कहानी में मिलते हैं । इसमें रजनी अविवाहित है तथा मृणालिनी विवाहित, उसकी पति से अनबन होती है और वह पति को छोड़ देती है परन्तु

--- रजनी एक ओर विवाह का विरोध करती है परन्तु दूसरी ओर दो वर्ष से सुभाष के साथ तथा उससे पहले रनवीर के साथ रहती थी । उसका विचार है `-----मेरा जी चाहता है, शादी करूँ सैटिल हो जाऊँ , फिर लगता है शादी के बाद तो जिन्दगी का सारा रोमान्स खत्म हो जायेगा --- शादी के बाद पुरुष सिर्फ पति और स्त्री सिर्फ पत्नी----पति-पत्नी का यह खेल मैंने आज तक तो कामेडी होते नहीं देखा---हमेशा ट्रेजिडी होती है ।[५७] रजनी मृणालिनी को मॉडलिंग में लगा देती है जहाँ वह पूर्ण रूप से आधुनिक नारी दिखायी देती है । मालिक के बेटे से जुड़ कर उल्लसित होकर कहती है ---मैं कितनी खुश हूँ ---कितनी खुश---।[५८] दोनों नारियों को लगता है कि उनके सामने परंपरागत मान्यताओं का कोई महत्व नहीं रह गया है । पारिवारिक मूल्य बदल गये हैं उनकी दृष्टि नये आयामों से नवीन व यथार्थवादी बन कर बदलती जा रही है ।

अत: कहा जा सकता है कि नयी पीढ़ी में काम सम्बंधों का रूप निरन्तर नूतन बनता जा रहा है, जिसे साठोत्तर कहानियों में अनेक विध रूपों में अंकित किया गया है । इसका यह रूप परंपरागत परिवारों में प्राय: नहीं मिलता । नयी पीढ़ी आज जिस पथ पर अग्रसर हो रही है वहाँ कहीं वह सफल नह होती है तो कहीं असफल होकर कुंठाग्रस्त होती जाती है । जैसा कि द्वितीय अध्याय में विवेचित किया जा चुका है कि अनावश्यक रूप से भावनाओं को दबाने से कुंठाओं का निर्माण होता है और व्यक्ति के आचार-व्यवहारों में परिवर्तन आता है । `आहटें ` (मृणाल पांडे) कहानी की क नु मी इसी स्थिति की शिकार है । जहाँ रोमांटिक प्रेम की कोमलता व सुकुमारता

में सहज ही अन्तर्द्वन्द्व व तनाव आने पर वह विद्रोह करने पर विवश हो जाती है ।[५६] 'आहटें' कहानी की यही आहटें आगे चल कर नारी को उस शरण्य की ओर पहुँचा देती है जहाँ उसका नारीत्व शेष नहीं रहता । 'शरण्य की ओर' कहानी की विजया भी इस शरण्य का सशक्त साक्ष्य उपस्थित करती है, जहां उसी से मात खाया उसका प्रेमी पालित, विजया के माध्यम से अपनी प्रेमिका उसी से बदला लेना चाहता है । '---इतना ही तो हुआ था कि महज एक दिन को वह एक शरण्य में गयी थी ---'[६०] और उसका नारीत्व खत्म हो गया था । इस प्रकार की यथार्थता, बदलते सम्बंध पारिवारिक जीवन में परिवर्तन का पथ प्रशस्त करते हैं ।

'कितनी कैदें' (मृदुला गर्ग) कहानी में मनोज मीना के प्रेम के बदलते चित्रण को सेक्स की अनुभूति में परिवर्तित कर दिया गया है । जो आज मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर सहज स्वाभाविक आवश्यकता मानी जाती है । भूकम्प आने पर दोनों कोयना बाँध के अन्दर लिफ्ट में बन्द हो जाते हैं। एक ओर मौत छायी हुई है दूसरी ओर प्रेम की असामान्य स्थिति में वासना की जागृति सेक्स में परिवर्तित होती है तथा अचेतन में लगी मीना की गांठें (कुंठाएँ) खुल जाती हैं । इसका खुला चित्रण रोमांटिक प्रेम के चित्रण से नितान्त भिन्न है ।'--- इससे पहले कि मैं समझ पाऊँ कि क्या हो रहा था वह मेरे भीतर प्रविष्ट हो चुका था ---।'[६१] लोहे के लिफ्ट रूपी पिंजरे में यह युगल ग्यारह घण्टों से कैद है । बिजली चली गयी है, भूकम्प चल रहा है तथा लिफ्ट बीच में रुकी हुई है । मृत्यु सैकुछ क्षण पहले आनन्द प्राप्त करने

की लालसा ही मनोज को मीना की नंगी देह पर आक्रमण कराती है । प्रेम के बदलते स्वरूप में दोनों के सम्बंधों में जो कुंठाएँ प्रवेश कर चुकी थी उनका निराकरण हो जाता है तथा बिजली के वापस आने तक बाहर के भूकम्प के साथ-साथ लिफ्ट के अन्दर उन दोनों का शारीरिक-मानसिक भूकम्प भी थम गया था ।[६२] तथा वे सामान्य हो गये थे । अत: स्पष्ट है कि मानसिक कुंठाएँ किस प्रकार व्यक्ति के आचार-व्यवहारों में परिवर्तन लाती हैं तथा उनकी सन्तुष्टि होने पर जीवन स्वाभाविक बन जाता है ।

'नारी नहीं-नारी का विज्ञापन' (रजनी पनिकर) कहानी भी ऐसे प्रेम सम्बंधों पर आधारित है, जहाँ नारी अपने नारीत्व को उजागर करने की दृष्टि से नारीत्व को खोने पर ही विवश हो जाती है और एक विज्ञापन मात्र बन कर रह जाती है । वह एक के बाद एक करके पाँच पुरुषों से सम्बंध स्थापित करती है तथा मॉडलिंग की नौकरी में अपने व्यक्तित्व को निखारते-निखारते ही खो देती है, और स्वयं यन्त्र मात्र बन कर रह जाती है ।[६३] तत्पश्चात् उसी लड़के से विवाह करना चाहती है जो उसके चाचा ने चुना था परन्तु बीच में अक्षय की ओर समर्पित होने लगती है । इस प्रकार धन व प्रेम की लालसा ही उसे नारी की अपेक्षा नारी का विज्ञापन बना देती है । स्पष्ट है कि आज नारी का स्वतंत्र व्यक्तित्व उसे एक ओर परम्परित धारणाओं से पृथक कर इधर-उधर डोलने की स्वतंत्रता देता है तो दूसरी ओर वह स्वतंत्र प्रेम की खोज में थक कर जीवन के उन्हीं आयामों की खोज करना चाहती है जिन्हें वह छोड़ चुकी है । 'ब्लाटिंग पेपर' कहानी की मन:स्थिति भी इसी प्रकार के मूल्यों को प्रदर्शित करती है । जहाँ प्रीति समर की प्रेम प्रेमिका है । एक ओर

अमर आर्टिस्ट के नाते उसे स्वीकार नहीं कर पाता, तो दूसरी ओर मनोहर पर उसका स्वयं का विश्वास नहीं रहता । जगदीश से अधिक उम्मीद नहीं है फिर भी उसके प्रति मोह अवश्य है'---बहुत से लोग उसकी जिन्दगी से डंका बजाते निकल गये--- वह कटी पतंग की तरह दिशाहीन भटकती रही---क्योंकि गिरी हुई स्याही सोखने की समस्या साधारण कागजों की है ---वह तो ब्लाटिंग पेपर है । --[६४] इस प्रकार वह वासनात्मक प्रेम रूपी स्याही को सोखती जाती है जिसमें प्रेम का यथेष्ठ अंकन कभी नहीं हो पाता । 'दायरे और दायरे ' कहानी की स्कूल अध्यापिका अपने सहकर्मी को प्रेम का आधार बनाती है । उस सम्बंध के विषय में एक क्षत्रा दु:खी होती है । फलस्वरूप प्रत्येक सम्बंध अपने-अपने दायरों तक सीमित होकर भिन्न व्यवहारों में परिणत होने लगते हैं ।[६५] दूसरी ओर उच्च पद पर कार्य करने वाले प्रतिष्ठित अफसर भी कार खराब होने का बहाना लेकर सड़क चलते या बसों में जाने वाली आकर्षक युवतियों को देख कर स्पन्दन का अनुभव करते हैं ।[६६] अत: स्पष्ट है कि एक ओर पारिवारिक सम्बंध बदलते हैं तो दूसरी ओर अन्य सम्बंध भी बदल रहे हैं । यथा- कार्यालयों में कार्य करनेवाले कर्मचारियों के अफसर के साथ सम्बंध, क्षात्र-अध्यापक के सम्बंध, अनेक पारिवारिक सम्बंधों में परिवर्तन लाने में सहायक होते हैं । इनका विरोध करता व्यक्ति जब असफल होता है तो दु:ख व्यंग्यों का सामना करते- करते उसकी कोमल भावनाएँ भी इस्पात की भाँति कठोर हो जाती हैं ।[६७] फलत: प्राचीन व नवीन जीवन दृष्टि में द्वन्द्व उपस्थित होता है । यहाँ तक कि प्रेम की असफलता व्यक्ति को इतना निरुत्साहित कर देती है कि वह सहज जीवन यापन नहीं कर पाता ।'मोहबंध' कहानी की अचला देवेन्द्र के प्रेम में तिरस्कार मिलने के कारण राजन के प्रेम को भी सहन नहीं कर पाती । राजन के सानिध्य में प्यार के क्षणों में भी पुरानी

स्मृतियों के स्मरण से उसकी आँखें भर-भर आती हैं ।[६८] प्रेम की असफलताओं से जन्मी कुंठाओं के कारण ही 'एक बार और ' कहानी की बिन्नी प्रेमी द्वारा ठुकराये जाने पर दूसरे व्यक्ति नन्दन का प्रणय प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर पाती ।[६९] 'कोई नहीं ----' कहानी की नमिता नौकरी के लिए प्रेम को ठुकरा कर जाने वाले अजय से व्यंग्यपूर्ण शब्दों में कहती है'----अजय तुम मेरे कोई नहीं हो, परन्तु उसकी प्रेम स्मृतियाँ फिर भी उसे भुलाये नहीं भूलती ।'[७०] कहीं- कहीं यही स्थिति नारी व उसके सम्बंधों को पिक्चर पोस्टकार्ड तक औपचारिक बना कर सीमित कर देती है ।[७१] कहीं प्रेम मात्र भौतिक सुख तक ही सीमित हो जाता है । प्रेमी का नौकरी से त्यागपत्र दे देना या प्रेमी की नौकरी छूट जाना ही प्रेम की असफलता का मुख्य कारण बन जाता है, और बनते परिवार बनने से रह जाते हैं । श्रीकान्त वर्मा की 'झाड़ी' तथा उषा प्रियम्बदा की 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' शीर्षक कहानियाँ इस तथ्य का साक्ष्य उपस्थित करती हैं ।

उपर्युक्त कहानियों के विवेचन से निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ये कहानियाँ बदलते हुए अभिनव भावलोक, नये सम्बंधों तथा जीवन आयामों का पथ प्रशस्त करती हैं जिनका केन्द्रीय स्वर अतीत एवं भविष्य की वर्जनाओं से मुक्त स्वतंत्र प्रेम व वर्तमान में जीने का आग्रह है । इसमें किसी प्रकार का अपराध बोध किसी को नहीं सताता । तृतीयत: नारियों में पारस्परिक नारी-सुलभ मृदुता के साथ-साथ एक स्वाभिमान के दर्शन भी होते हैं जिसमें नारी को यह विश्वास रहता है कि उसके लिए पुरुष की जितनी आवश्यकता है पुरुष के लिए वह भी उतनी ही आवश्यक है । अत: व्यर्थ की सीमाओं व वर्जनाओं में

वह दबना नहीं चाहती । शरीर विज्ञान के आधार पर नारी की भावात्मक ग्रंथियाँ अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय रहती हैं । पुरुष अपना स्वामित्व नारी पर मान कर उन ग्रंथियों के प्रवाह से रोमांचित होता रहता है और प्रेम सम्बन्ध शरीर की आवश्यकता से सम्बंधित काम सम्बंधों में परिवर्तित होने लगते हैं । अत: सम्प्रति कहानियों में अंकित इस पक्ष पर विचार किया जा रहा है कि काम सम्बंधों की चेतना की कहानियों से पारिवारिक जीवन में किस प्रकार बदलाव आता है ।

३- वासनात्मक सम्बंध तथा पारिवारिक जीवन :

पूर्ववर्ती विवेचन में लक्ष्य किया जा चुका है कि पारिवारिक जीवन पर प्रभाव डालने के लिए शारीरिक सम्बंधों के काम सम्बंध तथा काम वासना रूप एक सशक्त पक्ष के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं । इनमें से प्रथम पर पूर्ववर्ती पृष्ठों के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है । अत: यहाँ उसके द्वितीय पक्ष-वासनात्मक सम्बंधों के सन्दर्भ में पारिवारिक जीवन पर विचार किया जा रहा है । यह विवेचन सर्व सामान्य स्थिति से सम्बद्ध न होकर आलोच्य कहानियों में उसकी अभिव्यक्ति या प्रस्तुति पर आधारित है । 'ऊँचाई' (मन्नू मण्डारी) कहानी इस दृष्टि से सर्वप्रथम विवेचनीय है । इसकी शिवानी अपने पति शिशिर के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है परन्तु पुराने प्रेमी अतुल के साथ एक रात शारीरिक सम्बंध रखने में किसी प्रकार के संकोच का अनुभव नहीं करती । वह जानती है कि उसके प्रेमी का जीवन इस प्रकार उत्साह व जीवनेच्छा से भर जायेगा । वह अपने तन और मन में सन्तुलन लाने का प्रयास करती है तथा तन अपने प्रेमी को व मन पति को दे देती है । उसका विश्वास है '----शरीर पर चाहे वह क्राया हुआ हो, पर मन पर केवल तुम---केवल तुम क़ाए हुए थे ---किसी के

कितनी भी निकट चली जाऊँ, चाहे शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित कर लूँ, पर मन की जिस ऊँचाई पर तुम्हें बिठा रखा है वहाँ कोई नहीं आ सकता।[७२] शिशिर को यह सम्बंध स्वीकार नहीं है। अत: बात बढ़ने पर शिवानी शिशिर से क्षमा-याचना के स्थान पर तलाक ले लेती है। उसका तर्क है कि यहाँ - सम्बंधों का आधार इतना छिछला, इतना कमजोर है कि एक हल्के से झटके को भी संभाल नहीं सकता, तो सचमुच उसे टूट जाना चाहिए।[७३] पति को इस बात की जानकारी मात्र चोरी से पढ़े गये पत्र द्वारा मिलती है जो शिवानी की दृष्टि में एक विश्वासघात भी हो सकता है। नयी चेतना दृष्टि से भरी शिवानी का तर्क है कि तीन-चार माह की इस अवधि में उसके आचार-व्यवहार में पति ने कोई अन्तर नहीं पाया। अत: पत्नी पर पवित्रता, सतीत्व का आरोपण मात्र परंपरागत मान्यता को निभा कर पुरुष का अपना एकाधिकार प्रदर्शन करना है। आज की नारी पर पुरुष को तन-दान करने व पत्नीत्व को निभाने में भी निजी स्वतंत्रता चाहती है तथा नये जीवन के आयामों को स्थापित करती है, विद्रोह करती है। वस्तुत: उपर्युक्त प्रकार से ~~[illegible]~~ अतुल के साथ शारीरिक सम्बंधों को शिवानी द्वारा न्यायोचित ठहराना एक प्रकार से अपनी स्वेच्छाचारिता तथा वासनात्मक सम्बंधों को किसी न किसी तर्क द्वारा समर्थन देना है। फलत: यदि पति दण्ड देता है तो वह विघटन कराने के कगार पर पहुँच जाती है। इसी लेखिका की 'अनचाही गहराइयाँ' कहानी की नायिका अपने सहकर्मी के सानिध्य में आनन्द व सन्तोष की अनुभूति प्राप्त करती है जो नारी का एक बदलता आधुनिक यथार्थपरक रूप है। अब नारी 'घोड़ी' कहानी के अनुसार परंपरागत नारी की भाँति पति को परमेश्वर की तरह पूजने वाली या स्वयं घोड़ी

की तरह उसके तबेले में बंधे नहीं रहना चाहती ।[७४]

दाम्पत्य सम्बंधों में दरार आने का कारण कभी-कभी काम अतृप्ति भी होता है । कामेच्छा प्रत्येक व्यक्ति की ऐसी प्राकृतिक एवं तीव्र प्रेरक शक्ति है जिसकी अतृप्ति नारी व पुरुष को पूर्ण रूप से भटका देती है । नारी को कहीं नपुंसक पति प्राप्त होने के कारण जब काम तृप्ति पूर्ण नहीं हो पाती, तब वह परिवार के छोटे परिवेश से बाहर आकर अपनी तृप्ति करती है । यहाँ तक कि विद्रोह व प्रतिशोध की प्रतिक्रियाएँ इतनी तीव्र हो जाती हैं कि वह पति की हत्या की योजनाएँ भी बना लेती हैं।[७५] दूसरी ओर 'फौलाद का आकाश' कहानी की भावुक मीरा अपने बौद्धिक पति रवि से भावात्मक तृप्ति नहीं पाती । उसे चुम्बन, शारीरिक सम्बन्ध सभी कुछ एक यांत्रिकता की अनुभूति कराते हैं, और इसी अतृप्ति से उत्पन्न कुंठाओं के कारण वह अपने प्रेमी राजकृष्ण के साथ सम्बंध बढ़ाती हुई परि-श्रान्ति की अनुभूति प्राप्त करती है ।[७६] इस प्रकार काम की अतृप्ति ही परिवार को नष्ट करने में सहायक सिद्ध होती है ।

४- काम सम्बंधों के इतर आयाम-(बाल सम्बंधों के विशेष सन्दर्भ में) :

उन्मुक्त काम सम्बंधों के अच्छे व बुरे सभी परिणाम समाज में दृष्टिगोचर होते हैं । एक ओर व्यक्ति स्वतंत्र रहता है तो दूसरी ओर बच्चों पर इस प्रवृत्ति का कुप्रभाव पड़ता है और वे कुंठाग्रस्त हो जाते हैं । पूर्ववर्ती

विवेचन के अंतर्गत माता-पिता के सम्बन्ध-विच्छेद के कारण बच्चों पर पड़ने वाले प्रभावों को विवेचित किया जा चुका है । बालक की कामनाएँ स्त्री-पुरुष सम्बंधों को किस प्रकार प्रभावित करती है से सम्बंधित विवेचन यहाँ अभीष्ट है ।

कुछ कहानियों में पति-पत्नी के सम्बंधों में तीसरे व्यक्ति(बालक) की कामना ही उनके सम्बंधों को खोखला बना देती है और परिवार में तनाव आता है । यहाँ परिवर्तित जीवन दृष्टि दृष्टिगोचर होती है, जिसमें अन्तर्द्वन्द्व की प्रधानता रहती है । 'तीसरा आदमी' (मन्नू भंडारी) कहानी का सतीश अनुभव करता है कि जब उसके व शकुन के मध्य तीसरे मेहमान का विचार आता है तब वे एक दूसरे के कितने पास आ जाते हैं अन्यथा शकुन उससे दूर होती जा रही है । '---उसके शरीर से भी और मन से भी ---।'[७७] इसी कारण सतीश अपने में हीन भावना का अनुभव करता है । इधर शकुन अपने अभाव की रिक्तता को आलोक की रचनाओं से भरने का प्रयत्न करती है । यह प्रयत्न सतीश को आलोक के प्रति प्रतिद्वन्द्व का आभास कराता है और शंका का जन्म होता है। उसे लगता है कि तीसरे मेहमान का घर में आना कहीं इसी व्यक्ति के कारण न सम्भव हो जाय । वह अपने मन की उलझनों से छुटकारा पाने के लिए शकुन के पास आना चाहता है तो शकुन उदासीन होकर उससे दूर होती जा रही है । फलतः उनके विवाहित जीवन के मध्य अनचाही दीवारें खड़ी हो जाती हैं जिससे पारिवारिक जीवन में परिवर्तन स्वाभाविक हो जाता है ।

'तीसरा सुख' कहानी में चित्रित यही आकांक्षा लक्ष्मी की शारीरिक

हीनता-जन्य पीड़ा का कारण है जो उसे भटकाने में सहयोग देती है । लक्ष्मी जानती है कि शारीरिक हीनता के कारण वह पति द्वारा त्याज्य है, जीजा के प्रेम की पात्र भी वह इसी कारण न बन सकी । यहाँ तक कि अपने जीवन में वह किसी पुरुष के प्रेम की सहयोगिनी नहीं बन पायी है । उसे लगता है कि बात पता लगने पर यह अन्धा भिखारी भी उसे प्यार न दे सकेगा और वह इस पीड़ा से सदैव मनस्तापी रहेगी ।[७८] अत: कहा जा सकता है कि निराशा जन्य स्थितियां नारी के व्यक्तित्व को खंडित करके परिवार में परिवर्तन लाती है । 'बन्द दराजों का साथ' कहानी में इसी खंडित व्यक्तित्व को उभारा गया है । इससे नारी के व्यवहार में परिवर्तन आता है फलत: जीवन आयामों को नयी दृष्टि मिलती है ।[७९]

पूर्ववर्ती विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि कहीं विधवा नारी कामगत विवशता के कारण परंपरागत मान्यताओं को तोड़ती जा रही है, तो कहीं सधवा नये काम-सम्बंधों से जुड़ कर अपने पति को छोड़ दूसरे का आश्रय प्राप्त करने की आकांक्षा करती है । परिवार उसमें बाधक नहीं बनता अपितु कहीं- कहीं तो इन्हीं इतर सम्बंधों के द्वारा पति-पत्नी के सम्बंध और अधिक रोमांचित तथा स्थायित्व धारण कर लेते हैं । 'कितना बड़ा झूठ' (उषा प्रियम्बदा) कहानी की विवाहित किरन ढाई महीने पश्चात् अपने पति के पास आयी है । आने पर उसकी पति से भली- भाँति भेंट भी नहीं हो पाती कि पति दोनों बेटियों को लेने चला जाता है । इधर किरन अपने प्रेमी मैक्स को फोन करती है उसे पति की अनुपस्थिति में निमंत्रित करना चाहती है।

दूसरी ओर फोन पर एकाएक मैक्स की पत्नी वारिया मिलती है जिससे किरन को धक्का सा लगता है । उसे लगता है कि मैक्स के द्वारा वह छली गयी है । उसकी अनुपस्थिति में मैक्स ने चुपचाप अपनी स्टेनो वारिया से विवाह कर लिया है । न उसे विवाह में बुलाया और न ही उसके पत्र का उत्तर ही दिया । इसी द्वन्द्व से घिरी किरन पति के आने पर उसे वारिया के विवाह की सूचना देती है परंतु मन ही मन उसे प्रेमी द्वारा धोखा देने की झुंझलाहट व घृणा सालती जाती है जो उसे पति के अधिक निकट ला देती है । वह पति का हाथ पकड़ कर बिस्तर पर ले जाती है तथा शारीरिक व मानसिक तुष्टि प्राप्त करती है । इस प्रकार विवाहेतर सम्बंध असफल होने पर दाम्पत्य जीवन के उखड़े सम्बंधों को पुन: स्थापित करके जीवन में पूर्ण परिवर्तन लाने में सहायक होते हैं ।

कुछ कहानियों में उपरिनिर्दिष्ट मानसिकता को नाटक के रूप में प्रस्तुत करके भी पति-पत्नी एक दूसरे के अधिक निकट दिखाये गये हैं । 'टाइपिस्ट' (महीपसिंह) कहानी के वर्मा साहब का परिवार उजड़ चुका है । वे अपनी पत्नी को अपने निकट लाने की दृष्टि को ध्यान में रखकर अपनी टाइपिस्ट नीला से सम्बंध स्थापित करने का नाटक करते हैं । इससे उनकी पत्नी के सम्बंध फिर से मधुर बनने लगते हैं । बिखरता परिवार तथा दाम्पत्य सूत्र फिर से जुड़ने लगता है । इसी लेखक की 'दो धुंधली परछाइयाँ' कहानी भी लगभग ऐसी ही स्थिति को उजागर करती है ।

दूसरी ओर कुछ कहानियों में वैवाहिक जीवन की अतृप्तियाँ नर-नारी

को अन्य व्यक्तियों से यौन-सम्बंध स्थापित करने के लिए प्रेरित करती दृष्टि-गोचर होती हैं । इस प्रकार नारी- पुरुष विवाह रूपी सेफ्टीपिन लगा कर अपनी अतृप्त कामनाओं की तृप्ति करते हैं । 'सेफ्टीपिन' (मोहन राकेश) कहानी में मिसिज उमा सिंह ऐश्वर्य लिप्सा की तृप्ति के लिए एक-दो बार नहीं, तीसरी बार धनी किन्तु बूढ़े व्यक्ति मेजर सिंह से विवाह करके आधुनिकता के प्रति अपने उत्साह तथा साहस का परिचय देती है, तो कुछ कहानियों में ऐसी स्थितियाँ देख कर बेटा मां को आदर की दृष्टि से न देख कर उसे चिढ़ाता रहता है ।[८०] काम-सम्बंधों में परिवर्तन लाने का कारण कहीं-कहीं आर्थिक विवशता अथवा उसके प्रति तीव्र ललक होती है जिस पर स्वतंत्र रूप से विचार करना यहां आवश्यक है । यह ध्यातव्य है कि अर्थार्जन के कारण एक ओर नारी के अहं व वैयक्तिकता को अधिक प्रोत्साहन ~~मिलता~~ मिला है जिसे हम पूर्ववर्ती विवेचन में लक्ष्य कर चुके हैं । आर्थिक विवशताएँ किस प्रकार काम सम्बंधों में परिवर्तन लाती हैं यहाँ इसका विवेचन अभीष्ट है ।

५- काम सम्बंध और बढ़ती आर्थिक आवश्यकताएँ :

पूर्ववर्ती पृष्ठों में नर-नारी के सम्बंधों के विविध पक्षों के निरूपण केवल आर्थिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत अहं की तुष्टि के लिए उसके कामकाजी बनने के प्रभावों और परिणामों पर विचार किया गया है । यहाँ अर्थार्जन के लिए अनिवार्यतः विवश होने वाली, तथा कहीं निजी स्वार्थ से प्रेरित नारी के रूपों का जो चित्रण काम सम्बंधों के सन्दर्भ को उजागर करते हुए इन कहानियों में हुआ है, उस पर विचार किया जा रहा है ।

शिक्षित नारी अपने अहं व अस्तित्व की सन्तुष्टि के लिए कार्य करती है लेकिन नौकरी करके भी वह कभी प्रसन्न होती है तो कभी उसकी जिन्दगी - नीरस या यांत्रिक बन कर मात्र 'सात घंटे तक'[८१] ही सीमित रह जाती है। उसके बाद उसे समय बिताना दूभर हो जाता है। 'छुट्टी का दिन' (उषा प्रियम्बदा) कहानी में इसका निदर्शन करके उसे पहाड़ जैसी कठिन अडिग समस्या के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र नारी की स्थिति कभी-कभी और भी दयनीय हो जाती है, जब उसका मातृत्व व पत्नीत्व तरसता ही रह जाता है। मोहन राकेश कृत 'सुहागिनें' कहानी में पत्नी स्कूल की हैडमिस्ट्रेस के रूप में पति से दूर रह कर कार्य करती है, जबकि वह भावात्मक रूप से पति का सानिध्य चाहती है। उससे जुड़े हुए कुछ ऐसे आर्थिक दायित्व हैं, जिनके कारण न वह अपने ऊपर पैसा खर्च कर सकती है और न अपनी गोद ही भर सकती है। पति जानता है कि यदि पत्नी को अपने साथ रखता है तब उसे नौकरी छोड़नी पड़ेगी और आर्थिक समस्या उग्र रूप ले लेगी। इधर पत्नी की नौकरी समाप्त होगी तो उधर सन्तान का झंझट उठाना पड़ेगा। वह सन्तान के आर्थिक बोझ के भय से पत्नी के मातृत्व का गला घोंटता रहता है। यहाँ तक कि पत्नी को लिखे गये पत्रों में पति-पत्नी प्रेम सम्बंधी बातों की अपेक्षा अपने लिए कोट तथा बहन के लिए शाल भेजने का आग्रह अधिक रहता है।[८२] यह स्पष्टत: सम्बंधों की ऐसी यांत्रिकता है, जिसमें उपयोगिता के सिवाय कोई दूसरा दृष्टिकोण प्रकाश में नहीं आता। पत्नीत्व व मातृत्व के लिए आतुर व तरसती नारी के दर्शन 'जीती बाजी की हार' तथा 'अकेली (मन्नू भण्डारी) कहानियों में भी मिलते हैं। इन नारियों के लिए आर्थिक स्वतंत्रता एक अभिशाप बन जाती है तथा भावनाओं को ठुकरा कर

कभी पुरुष नारी को स्वीकारने में विचारता ही रह जाता है और टूटे हुए दाम्पत्य सम्बंध अन्त तक टूटे ही रह जाते हैं ।[८३] यह कहा जा सकता है कि आधुनिक नारी का बदलता हुआ जीवन ऐसी स्थिति में उसे मानसिक रूप से तोड़ तो देता ही है, साथ ही दाम्पत्य जीवन को भी निरर्थक बना देता है । अर्थ की ललक में कभी- कभी वह न तो पत्नीत्व को प्राप्त कर पाती है और न मातृत्व को ही ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कहीं -कहीं आर्थिक समस्या सुरसा की भाँति विकराल मुँह फैलाए दिखायी देती है, जिसने संयुक्त परिवार को तो पूर्ण रूप से हिला कर विघटित किया ही है साथ ही एकाकी परिवार को भी दबोचा है । छोटे-छोटे आर्थिक प्रश्न दाम्पत्य विघटन का आधार बनते जाते हैं । रामकुमार कृत -`धूल भरे तूफान`, कृष्ण बलदेव वैद कृत -`अगर मैं आज -----` आदि कहानियाँ इसी प्रकार की हैं । बदलते परिवेश में आर्थिक आवश्यकताओं के साथ-साथ स्वार्थ प्रवृत्तियाँ भी स्त्री- पुरुष के सम्बंधों में परिवर्तन लाती हैं । यहाँ तक कि पुरुष अपनी पत्नी को उसके मित्रों के साथ घूमने तथा अफसरों को भेंट करने में भी संकोच नहीं करता । आज के व्यस्त जीवन तथा आर्थिक समस्याओं के कारण अधिकांशत: व्यक्तियों का विवाह अधिक आयु में सम्भव हो पाता है । इस कारण उसमें कुंठाओं का जन्म होना स्वाभाविक ही कहा जा सकता है । वह परिवार से कटने लगता है । यहाँ तक कि इन्हीं कारणों से वह सामान्य-जीवन -यापन भी नहीं कर पाता तथा इस मानसिकता से उबरने का प्रयत्न करता है । कहीं वह टूटने लगता है तो कहीं मानसिक परितृप्ति के नये साधन अपनाता है । रवीन्द्र कालिया की

कहानी 'सत्ताइस साल की उमर तक' का नायक एकाकी जीवन की ऊब को मिटाने के लिए अर्द्ध रात्रि में उठ कर सोयी स्त्रियों को निहार कर अपनी काम वासना की तुष्टि करता है ।[८४] बढ़ती हुई आर्थिक समस्याओं से विवश होकर ही 'काला बाप-गोरा बाप' (महीप सिंह) कहानी में नारी एक ओर अपने सम्बंध अन्यत्र स्थापित करती है तो दूसरी ओर अपनी युवा पुत्रियों के स्वतंत्र दृष्टिकोण व उन्मुक्त सम्बंधों को सहज स्वीकार कर उन्हें मॉडलिंग कार्य करने देती है ।

आर्थिक विवशता तथा काम सम्बंधों की मार्मिकता का सशक्त चित्रण कमलेश्वर कृत 'बयान' कहानी में हुआ है । इसमें आर्थिक विवशता तथा काम-जन्य मानसिकता का एक नया पहलू मिलता है जो अब तक अछूता था । पति बेरोजगार फोटोग्राफर है तथा जीविका के अभाव में चिन्तित है , विवशता में वह अपनी पत्नी के कुछ माडल चित्र नग्न मुद्राओं में उतारता है । चित्र प्रदर्शित होने पर फोटोग्राफर आत्मग्लानि से आत्महत्या कर लेता है जब उसे ज्ञात होता है कि उन चित्रों को देखने से ही उसकी पत्नी पर अनैतिक आचरण का दोषारोपण करके उसे नौकरी से निकाल दिया गया है और फोटोग्राफर की आत्महत्या के पश्चात् , पति की हत्या का पाप भी पत्नी के उसी अनैतिक आचरण में ढूंढने का प्रयास किया जा रहा है । इस प्रकार स्पष्ट है कि आज का परिवेश व व्यक्तियों के दृष्टिकोण में इतनी विचित्रता तथा दूसरे शब्दों में ऐसी विकृति आ गयी है कि उन्हें उससे हट कर कुछ दृष्टिगोचर नहीं होता । यही नये दृष्टिकोण कहीं- कहीं व्यक्तियों की

दृष्टि में भ्रम उत्पन्न कर देते हैं जिससे व्यक्ति के दृष्टिकोण के साथ- साथ जीवन के व्यवहारों में भी परिवर्तन आता है ।

श्रीकान्त वर्मा के 'झाड़ी' कहानी संग्रह की अधिकांश कहानियों में नारी और पुरुष आर्थिक सम्पन्नता के आधार पर अपने- अपने अहं को बरकरार रखने के लिए प्रयत्नशील दिखायी देते हैं । पुरुष को इसी कारण अनुभव होता है कि वह 'दूसरे के पैर' पर खड़ा है ।[८५] स्त्री को लगता है कि पति को उसका स्वत्व तनिक नहीं सुहाता ।[८६] इस कारण प्रेम और आकर्षण की स्थिति समाप्त होकर दोनों के मध्य व्यंग्यात्मक संवाद रह ही रह जाते हैं।[८७] दोनों विवाह सम्बंध को असफल मानते हैं ।[८८] यहाँ तक कि 'परिणय' कहानी की पत्नी स्पष्ट कह देती है'---- मैं तुम्हारे लिए असफल हुई तुम मेरे लिए- यह साफ हो जाना चाहिए- हम दोनों का प्रेम अब समाप्त हो चुका है ---।[८९] यही काम सम्बंध अधिक स्वतंत्रता मिलने पर स्वच्छंदता तथा उन्मुक्त यौन सम्बंधों में परिवर्तित होते जाते हैं, जो परवर्ती विवेचन से स्पष्ट है ।

६-उन्मुक्त यौन सम्बंध :

पूर्ववर्ती अध्याय में निर्दिष्ट किया जा चुका है कि आधुनिक दृष्टिकोण के विकसित होने तथा नैतिक मान्यताओं में शिथिलता आने के कारण अब उन्मुक्त यौन सम्बंध अधिक विकसित होने लगे हैं । मनोविज्ञान भी इस प्रवृत्ति को प्रश्रय दे रहा है जिस पर द्वितीय अध्याय में विचार किया जा चुका है । इन्हीं नैतिक मान्यताओं के दृष्टिकोण में परिवर्तन आने से जहाँ परम्परागत नारी अपने एक मात्र पति से यौन सम्बंधी बातें करते हुए हिचकती थी वहाँ आज के परिवर्तित

दृष्टिकोण व समाज में मित्र की पत्नी से या पति के मित्र से भी स्पष्ट रूप में इस प्रकार की बातें करने में कोई संकोच नहीं होता । 'अपत्नी' (ममता कालिया) कहानी का प्रबोध अपने मित्र व उसकी पत्नी से परिवार- नियोजन सम्बंधी बातें स्पष्ट रूप से कहता है ।'--- तुम लोग तो अब सावधान रहते हो न ? आजकल उस डाक्टर ने रेट बढ़ा दिये हैं पिछले हफ्ते हमें डेढ़ हजार देना पड़ा ----- कैसी अजीब बात है ? महीनों सावधान रहो और एक दिन के आलस्य में डेढ़ हजार रूपये निकल जायें----हमने एक और आसान तरीका ढूंढ़ा है । लीला इन्हें जरा पैकेट दिखलाना----बस ध्यान देने की बात है कि एक दिन भी भूलना नहीं चाहिए, नहीं तो सारा कोर्स डिस्टर्ब हो जाता है । नौकर जब शाम को चाय ट्रे में लाता है, मैं तो तभी, गोली ट्रे में रख देता हूं---।[९०] नारी भी मात्र काम तुष्टि प्राप्त कर प्रसन्न रहती है । उसे विवाह से विशेष लगाव नहीं रह गया है । अपितु विवाह एक व्यर्थ का झंझट ही लगता है । इस कारण न तो उसे प्रेमी से शीघ्र विवाह करने की आतुरता होती है और न प्रेमी को ही ।[९१] यहाँ तक कि पर-पुरुष से यौन सम्बंध रखने वाली नारी इसे स्पष्ट रूप से स्वीकार करती है । वह पति के नौकरी पर जाने के बाद प्रेमियों से स्वच्छंद भोग की तैयारी कर लेती है तथा इसमें कोई अपराध बोध न मानकर नि:संकोच कहती दिखायी देती है'---कुकी जिस दिन पेट में आयी उस दिन तुम दोनों ने ही---दिन को मैंने--- रात को पति ने---।'[९२]

गिरिराज किशोर कृत 'पगडंडी' शीर्षक कहानी में प्रस्तुत सामाजिक मर्यादा इतनी टूट चुकी है कि पुत्र व पिता एक ही घर में पुत्री व मां पर जाल फैंकते रहते हैं । यहाँ तक कि एक अन्य कहानी में मां- बेटी दोनों एक ही पुरुष की भोग्या बन रही हैं । एक ओर चालिस वर्षीया मां अपनी बीस

वर्षीया युवा पुत्री की चिन्ता न कर अपनी यौन तृप्ति में लीन है तो दूसरी ओर अपने युवा बेटे से अधिक विधवा मां को अपनी शारीरिक तृप्ति की चिन्ता है ।[९३]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर संक्षेप में कहा जा सकता है कि इन कहानियों में काम-वृत्ति विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर हो रही है । परिणाम-स्वरूप परिवार के सम्बंधों व रूप में परिवर्तन आ रहा है । समस्त रिश्ते-नाते परिवर्तित होते जा रहे हैं और परिवार परिवर्तित नये आयामों को स्वीकारने की विवशता के कगार पर खड़ा है । इसके कारण एक ओर नारी की यौन-वासना और उसका किसी के साथ स्वतंत्र सम्बंध रखना प्राय: दिखायी देता है । दूसरी ओर मां के वात्सल्य, ममता तथा स्नेह की पूर्ण उपेक्षा करके उच्चपदासीन बेटा उसे पूर्ण विस्मृत करने या उपेक्षित करने का प्रयत्न करता है ।[९४] इस प्रकार बाह्य रूप से सुखद दिखायी देने वाले परिवारों के मध्य भी एक तनाव आ जाता है जो परिवारों को तोड़ देता है और शेष बचता है ऐसा वातावरण जहाँ दबी हुई साँसें हैं, जिन्हें परिवार के सदस्य एक दूसरे से जुटा कर जीना चाहते हैं पर इस प्रयत्न में अपने को प्राय: असमर्थ पाते हैं ।[९५] एक ओर मां-बेटी एक ही पुरुष से शारीरिक सम्बंध रखने में कोई अपराध-बोध नहीं मानती तो दूसरी ओर उन्मुक्त यौन सम्बंध के दूसरे पहलू में तृप्ति के लिए पति के नौकरी पर चले जाने पर उसकी पत्नी का अपहरण तक कर लिया जाता है ।[९६] प्रेमी के दूर होने पर उसकी प्रेमिका को बहला कर अपने वश में कर लेने का प्रयत्न भी अनेक कहानियों में मिलता है ।[९७] तो दूसरी ओर गर्भपात के बिन निष्फल हो जाने पर अनिच्छित शिशु के मन में फालतू हो जाने की भावना उसके नियमित व सुचारु जीवन को नष्ट कर देती है ।[९८] इस दृष्टि से देखने पर कहा जा

सकता है कि नये दृष्टिकोण व पारिवारिक जीवन में नवीनता का प्रवेश कहीं अच्छे परिणाम दिखाता है तो कहीं अनेक विकृतियों का जन्म भी इससे उत्पन्न कुंठाओं के कारण ही होता है । अत: काम अतृप्ति से कुंठाग्रस्त व्यक्ति, आलोच्य काल की कहानियों में किस प्रकार विकृतियों का शिकार होता जा रहा है । इस सन्दर्भ में यहाँ विचार कर लेना आवश्यक है ।

७- काम अतृप्ति तथा तज्जन्य विकृतियाँ :

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत यह भी लक्ष्य किया जा चुका है कि अतृप्त काम सम्बंध अनेक विकृतियों को जन्म देते हैं, जिनके कारण अनेक अवांछनीय आचरण विकसित होने लगते हैं । राजेन्द्र यादव कृत 'प्रतीक्षा' कहानी की गीता का सम्बंध काम विकृति के फलस्वरूप ही समलैंगिक सम्बंध में परिणत हो जाता है और गीता नन्दा के साथ सम्बंध स्थापित कर लेती है । इस क्षण न नंदा को होश रहता है न गीता को, नन्दा का पागलपन उसे उस सीमा तक पहुँचा देता है कि वह नोचने काटने लगती है ।[९९] कुछ कहानियों में इस स्थिति का अंकन दूसरे रूप में हुआ है, जहाँ नारी पति से यौन पूर्ण तृप्त न होकर नव युवा लड़कों के समक्ष, अर्द्धनग्न अवस्था में आकर उन्हें कामोत्तेजित करने का प्रयास करती है ।[१००] अथवा वासना से व्याकुल होकर किरायेदारों या अन्य व्यक्तियों के सामने मात्र पेटीकोट- ब्लाउज पहन कर घूमती है । उनके प्रति शरीर समर्पित करने की भावना विकृति का ही एक रूप माना जा सकता है ।[१०१]

यौन विकृति का नया पहलू 'आधार' (दीप्ति खंडेलवाल)कहानी में

मिलता है जिसमें सुधीर व बीना पति-पत्नी हैं । इसमें तीसरा व्यक्ति अविनाश सुधीर का अविवाहित मित्र है । वह विवाह के बन्धन में फंसना एक व्यर्थ का झंझट मानता है । यहाँ तक कि अपने को नारी से दूर-दूर रखता है । यही अविनाश एक समय सुधीर के घर ठहरता है । अचानक बीना की ब्रा खो जाती है जिसका दोषारोपण महरी पर किया जाता है, परन्तु अपराधी कोई दूसरा ही होता है । अर्द्धरात्रि में अविनाश के कमरे की बिजली जलती देख सुधीर को अनुमान होता है कि अविनाश रात्रि के शान्तिमय वातावरण में अच्छे साहित्य का सृजन कर रहे होंगे परन्तु कमरे में झांकने पर उनके आश्चर्य की सीमा नहीं रहती---अविनाश साहित्य की रचना नहीं कर रहे थे, वह बीना की खोई हुई ब्रा को पागलों की तरह चूम-चूम कर उसकी पूजा कर रहे थे ।[१०२] यह काम अतृप्ति तथा तज्जन्य कुंठा का नवीन आयाम ही माना जा सकता है जहाँ नैतिक अंकुशों के कारण व्यक्ति बाह्य रूप से स्वयं को आदर्शवादी घोषित करता है, परन्तु उसकी अतृप्तियाँ बढ़ कर नये रूप धारण करती जाती हैं और वह समय-असमय उनकी तृप्ति के लिए दूसरे साधनों का प्रयोग करने का प्रयत्न करता है ।

८- काम सम्बंधों के इतर आयाम :

पूर्ववर्ती विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि स्त्री- पुरुषों के सम्बंधों में परिवर्तन आने से आज अनेक नये आयाम उभर कर सामने आये हैं । इनके साथ-साथ कुछ अन्य आयाम भी कहे जा सकते हैं जिन पर यहाँ विचार करना आवश्यक है । प्राय: पुरुष की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए तरसती

नारी जब असंतोष का अनुभव करती है तो आन्तरिक अभाव को बाह्य संपन्नता (भौतिक सुख) में परिवर्तित कर अपने मन को सन्तुष्ट घोषित करने का प्रयास करती है ।[१०३]

एक ओर आज की आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर नारी में अपने स्वाभिमान के प्रति जागरूकता तो है ही दूसरी ओर वह पुरुष की उपेक्षा, उच्छृंखलता या एकाधिकार को किसी सीमा तक स्वीकार नहीं कर पाती । वह समानता चाहती है, इस कारण पति बनाने की अपेक्षा जीवन साथी या मित्र बनाना अधिक उपयुक्त समझती है । सम्बंधों में बदलाव के इसी दृष्टिकोण को कहानियों में भिन्न-भिन्न रूप से अंकित किया गया है, जहाँ कहीं वह पति के प्रति रंचमात्र संदेह को नहीं झेल पाती । इस तथ्य की अभिव्यक्ति मन्नू भंडारी ने इस प्रकार की है "---- औरत की नजर यों ही बड़ी पैनी होती है फिर उस पर सन्देह की सान चढ़ जाय तो आकाश-पाताल चीरने में भी उसे देर नहीं लगती ---- जिसका कारण आज जिन्दगी का हर पहलू, हर स्थिति और हर सम्बंध एक समाधान हीन समस्या होकर आता है, जिसे सुलझाया नहीं जा सकता, केवल भोगा जा सकता है, जिसमें आदमी निरंतर बिखरता और टूटता चला जाता है --- इसी टूटन तथा घुटन से मुक्ति पाने के लिए नारी प्रयत्नशील है जहाँ उसे प्रयत्न करते हुए---सम्बंधों को मरी हुई खाल की तरह नोंच फेंकने में भी संकोच नहीं होता --- ।"[१०४]

अत: नारी अपने अतीत को विस्मृत कर नये सम्बंधों को स्थापित

करती जाती है ।[१०५] उपर्युक्त विवेचन में अधिकांश कहानियों से प्रतीत होता है कि परिवार में नारी की स्थिति एक धुरी के समान है । उसकी परिवर्तित दृष्टि ही कहानियों में पारिवारिक जीवन का बदलाव है परन्तु इसके साथ-साथ पुरुष की दृष्टि से भी अनेक कहानियों में चित्रित सम्बंधों में परिवर्तन आया है । इस दृष्टि से ' जो लिखा नहीं जाता' (कमलेश्वर) कहानी विशेष रूप से उल्लेखनीय है । इसमें महेन्द्र अपने विवाह पूर्व प्रेम को खुले रूप में प्रस्तुत करता है और उसके सातत्य का समर्थक है, किन्तु अपनी पत्नी सुदर्शना के विवाह पूर्व के प्रेम सम्बंध की जानकारी मात्र से ही उसे स्वीकार नहीं कर पाता । फलस्वरूप दोनों के मध्य अनचाहे ही तीसरा व्यक्ति दीवार के रूप में आ जाता है और स्त्री- पुरुष सम्बंधों में कटुता आ जाती है । यह निर्विवाद सत्य होता जा रहा है कि आज नारी जीवन-संघर्ष में पुरुष से किसी रूप में कम नहीं है अपितु एक पग आगे ही है । अत: वह अपने अस्तित्व को पूर्ण रूप से पुरुष के अस्तित्व में विलीन कर दे यह सम्भव प्रतीत नहीं होता, जबकि आधुनिकता का मुखौटा लगाये प्रत्येक पुरुष के अन्दर पत्नी पर एक छत्र स्वामित्व की ललक झाँकती है ।[१०६] जहाँ वह अपनी इस ललक पर थोड़ा नियंत्रण कर लेता है तब दाम्पत्य जीवन सुखी हो जाता है अन्यथा विघटन अवश्यम्भावी ही होता है । इसका महेन्द्र एक सशक्त उदाहरण कहा जा सकता है ।

सम्बंधों में परिवर्तन आने का एक अन्य अछूता पक्ष आधुनिकता को फैशन के रूप में स्वीकार करने वाली मानसिकता है, जिसके प्रति विशेषतया मध्यवर्गीय शिक्षित नारी नगरों में व महानगरों में दृष्टिगोचर होती है । यह मानसिकता किशोरावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक न्यूनाधिक रूप में वर्तमान रहती है । यही मानसिकता कहीं नारी को 'सोसायटी गर्ल' बना कर बढ़ती

आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धनिकों तथा उच्चपदासीन अफसरों की हवस की पूर्ति करती है तो कहीं स्वयं के व्यक्तित्व को निखारने की दृष्टि से मॉडलिंग कराती व शारीरिक सौन्दर्य का मनचाहा मूल्य लेती है ।[१०७] फिर भी कहा जा सकता है कि आर्थिक आकर्षण एक ऐसा आकर्षण है जहाँ कहीं भौतिक सुख के लिए नारी अपनी मासूम बेटियों का सौदा कर किसी को यौन सुख देने को अग्रसर होती है,[१०८] तो कहीं स्वयं समाज से बहिष्कृत होने के कारण अपने नारीत्व का सौदा करती है ।[१०९] अत: आज के परिवेश में सेक्स सम्बंध उन्मुक्त तथा स्वेच्छा से पनप रहे हैं ।'---आज की नारी अपने में पूर्ण होती जा रही है ---वह न सती है, न वेश्या, वह एक मात्र नारी है ---।'[११०] इसी कारण सेक्स और नैतिकता के बदलते परिवेश में व्यक्ति के दृष्टिकोण में पूर्ण परिवर्तन आ रहा है अब व्यक्ति का विचार होता जा रहा है कि '--- आधुनिक युग की दृष्टि विज्ञान वादी, गति-विकास वादी, राह-भौतिक वादी और गन्तव्य भोगवादी है । इस सन्दर्भ में जो निरुपयोगी है वह अनावश्यक है जो अनावश्यक है वह अमान्य है ---।[१११]

साठोत्तर कहानियों के सन्दर्भ में वार्ष्णेय के शब्दों में यह कहा जा सकता है कि अब'---- ऐसा लगने लगा है कि शायद कहानी विशेष रूप से सेक्स के जंगल में खो सी गयी है । जाने-माने सभी कथाकार यौन कुंठाओं एवं वर्जनाओं के विभिन्न आयामों के चित्रण को ही मूल्य मर्यादा और प्रतिमान समझ बैठे हैं और ईमानदारी से इसका निर्वाह भी कर रहे हैं ---।'[११२] यदि इसका सम्यक् मूल्यांकन किया जाय तो यह कहना अनुचित न होगा कि ऐसी सामग्री

का संयोजन एक प्रकार की सस्ती लोकप्रियता के उद्देश्य को लेकर है । आवश्यकतानुसार जीवन के इस पक्ष को प्रकाश में लाना उतना बुरा नहीं है जितना कि उसकी प्रस्तुति को चटकीला बनाने के लिए ऐसे चित्रों को उरेहना । सेक्स की समस्या नि:संदेह एक व्यापक और गंभीर समस्या कही जा सकती है किन्तु उसके लिए कला के अपेक्षाकृत सूक्ष्म उपकरणों का सहारा लेना अधिक वांछनीय कहा जा सकता है ।

निष्कर्ष :

पूर्ववर्ती पृष्ठों में साठोत्तर कहानियों में आये हुए पारिवारिक जीवन के जिन अनेकविध पक्षों का निरूपण हुआ है उसके समग्रतया मूल्यांकन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इन कहानियों में सामान्य मानव सम्बंध और विशेषकर पारिवारिक सम्बंध विशेष रूप से परिवर्तित हुए हैं । इनमें नारी का जो रूप मिलता है वह विशेष रूप से अर्थार्जन में संलग्न नारी का है ।अर्थार्जन में संलग्न नारी ही समाज की रूढ़ियों, पारम्परिक मान्यताओं, तथा पुरुष की श्रेष्ठता के लिए एक चुनौती बनी हुई है । इसी कारण कहीं वह काम की खोज में भटकती है तो कहीं बॉस की ज्यादतियाँ सहन करती है । एक ओर प्रमोशन की लालसा में वह स्वयं को गिरा तक देती है तो दूसरी ओर कभी उसका उद्देश्य केवल अहं की तुष्टि मात्र ही होता है । कहीं उसके वेतन का घर में मान होता है , तो कहीं उसे अच्छे वर की प्राप्ति में सहायता - मिलती है । परन्तु नौकरी करने वाली नारी एक दोहरी जिन्दगी जीने वाली नारी अवश्य बन गयी है । परिणाम स्वरूप सम्बंधों, आचरणों, व्यवहारों के नये आयाम पारिवारिक जीवन में विकसित हो चले हैं । अत: नारी प्राय:

उलझनों से भरी दिखायी देती है तथा आधुनिक होकर लड़ते-जूझते हुए कभी परम्परागत रूढ़ियों को अपनाकर, अपना हित करना चाहती है तो कभी - स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है ।

साठोत्तर कहानियाँ उपर्युक्त सभी आयामों को बड़ी सूक्ष्मता एवं क्षमता के साथ रूपायित करती है, जिन्हें यथास्थान लक्ष्य किया जा चुका है । उपर्युक्त तथ्यों के अतिरिक्त इन कहानियों में पारिवारिक जीवन के जो अन्य पक्ष उभर कर आये हैं वे संक्षेप में इस प्रकार हैं -

१- नारी की आर्थिक स्वतंत्रता और उसके कारण परिवार में विश्रृंखलता।

२- उन्मुक्त यौन सम्बंध तथा तद्गत विकृतियाँ ।

३- काम अतृप्ति तथा तज्जन्य विकृतियाँ जो पारिवारिक जीवन में परस्पर अविश्वास, कटुता और कालान्तर में द्वन्द्वों को जन्म देती है। कभी- कभी इनका दंश जघन्य अपराधों की ओर ले जाता है ।

४- नर-नारी के सम्बंधों में वैषम्य के कारण बच्चों की उपेक्षा ।

५- हीनता की मनोवृत्ति और निराशा ।

६- अहं की अदम्य स्थिति तथा उसके कारण संघर्ष ।

ये सभी जीवनगत आयाम कहानियों में वर्णित पारिवारिक जीवन की स्थितियों को प्रभावित करते हुए दिखाये गये हैं । इसके साथ ही अन्त में यह उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत विवेचन में आयी अधिकांश कहानियाँ मध्यवर्गीय समाज की हैं । सामाजिक जीवन की समग्रता के दृष्टिकोण से यदि विचार

किया जाय तो ये केवल समाज के एक भाग का प्रतिनिधित्व ही करती हैं। भले ही यह वर्ग आज महत्वपूर्ण स्थान रखता हो किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि ये व्यापक जीवन की अभिव्यक्ति हैं। विषय वस्तु की इस सीमा बद्धता का कारण कहानीकारों की नगरीय जीवन तथा उसके परिवेश से सम्बद्धता और उनकी यथार्थपरक दृष्टि कही जा सकती है। यही कारण है कि ग्रामीण जीवन से सम्बंधित कहानियाँ अत्यन्त न्यून संख्या में मिलती हैं। फिर भी आधुनिकता के संक्रमण के कारण सुशिक्षित समाज में जीवन मूल्यों का विघटन तथा नये जीवन मूल्यों के विकास के आयाम हमें इनमें सुस्पष्ट रूप से दिखायी पड़ते हैं। अतः कहा जा सकता है कि आलोच्य युग का कहानीकार बदलती हुई सामाजिक चेतना का सूक्ष्म दर्शन करके उसे यथोचित न्याय-पावना प्रदान करता है। यही कारण है कि साठोत्तर हिन्दी कहानियों में एक ओर परिवार नये आयामों को स्वीकार कर बदल रहा है और उसके पारिवारिक सम्बंधों में परिवर्तन आ रहा है तो दूसरी ओर सामाजिक पारिवारिक मूल्य बदल रहे हैं जो हमारे परवर्ती अध्याय का विषय है।

--

सन्दर्भ- संकेत :

१- हिंदी कहानी अपनी जबानी- डा० इन्द्रनाथ मदान

२- डॉ० रमेश चन्द्र लावनिया- हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य-पृ०१६७-१६८

३- उषा प्रियम्बदा- वापसी- जिन्दगी और गुलाब के फूल- कहानी संग्रह- पृष्ठ-१३५

४- उपरिवत्- पृष्ठ-१४२

५- उपरिवत्- पृष्ठ- १४२

६- डॉ० महीप सिंह- वेतन के पैसे- उलझन- कहानी संग्रह- पृष्ठ-२०६

७- उपरिवत्- पृष्ठ-२०६

८- ज्ञानरंजन- शेष होते हुए- फैंस के इधर और उधर- कहानी संग्रह- पृष्ठ-७४-८६

९- उपरिवत्- पृष्ठ-८६

१०- ज्ञानरंजन- पिता- फैंस के इधर और उधर- कहानी संग्रह ।

११- शानी- एक नाव के यात्री- एक दुनिया समानान्तर-सं०राजेन्द्र यादव, पृष्ठ-३४५

१२- उपरिवत्- पृष्ठ-३४८

१३- महीप सिंह- सन्नाटा- इक्यावन कहानियाँ- कहानी संग्रह, पृ० ३३०

१४- मोहन राकेश- क्वार्टर- क्वार्टर तथा अन्य कहानियां-कहानी संग्रह, पृ० १८१-२०४

१५- ज्ञानरंजन- सम्बन्ध-फैंस के इधर और उधर-कहानी संग्रह,पृ०११५-११६

१६- रामदरश मिश्र- चिट्ठियों के बीच- खाली घर-कहानी संग्रह ।

१७- रामदरश मिश्र-'नयी कहानी : यथार्थ के विविध आयाम'- हिन्दी कहानी अन्तरंग पहचान- पृष्ठ-७५

१८- रामदरश मिश्र- दूरियाँ- एक वह- कहानी संग्रह ।

१९- राजेन्द्र यादव- बिरादरी बाहर- किनारे से किनारे तक-कहानी संग्रह।

२०- भीष्म साहनी- कटघरे - श्रेष्ठ प्रेम कहानियां- सं० राजेन्द्र अवस्थी, पृष्ठ-१२०

२१- सुरेश सिन्हा- तट से छूटे हुए- माध्यम पत्रिका- जून १९६६।

२२- महीप सिंह- उलझन- उलझन- कहानी संग्रह (यह कहानी हमारे आलोच्य काल से पूर्व की है किन्तु इस प्रकार की मानसिकता की एक दो कहानियाँ पहले भी दिखायी दी हैं जिन्हें यहाँ विवेचित करना अभीष्ट है)

२३- कमलेश्वर- राजा निरबंसिया- मेरी प्रिय कहानियाँ- कहानी संग्रह (यह कहानी भी हमारे आलोच्य काल से पहले की है । इसमें परंपरागत मूल्यों की स्थापना, जीवन मूल्यों का संक्रमण तथा अन्त में नये मूल्यों की स्थापना, जीवन मूल्यों का संक्रमण तथा अन्त में नये मूल्यों की स्थापना व नये जीवन आयाम दृष्टिगोचर होते हैं, इस कारण इसका विवेचन यहाँ अभीष्ट माना गया)

२४- द्रष्टव्य- पुरानी मिट्टी : नये ढाँचे(वीरेन्द्र मेहन्दीरत्ता) , पिता, फँस के इधर और उधर(ज्ञानरंजन), एक विदाई और (भीम सेन त्यागी) तट से छूटे हुए(सुरेश सिन्हा) तथा बिरादरी बाहर(राजेन्द्र यादव) आदि कहानियां ।

२५- महीप सिंह- कटाव- इक्यावन कहानियाँ- कहानी संग्रह-पृ० ३१६

२६- राजेन्द्र यादव- टूटना- टूटना तथा अन्य कहानियां-कहानी संग्रह, पृष्ठ-१७२

२७- मन्नू भंडारी-त्रिशंकु- त्रिशंकु-कहानी संग्रह- पृष्ठ-१२५

२८- मोहन राकेश- एक और जिन्दगी- एक दुनिया समानान्तर-
सं० राजेन्द्र यादव- पृष्ठ-२६०

२९- उपरिवत्- पृष्ठ-२६४

३०- महीप सिंह- लोग- इक्यावन कहानियाँ- कहानी संग्रह- पृ० २१६

३१- महीप सिंह- गन्ध- विकल्प : कथा साहित्य विशेषांक, नवम्बर१९६८
सं० शैलेश मटियानी- पृष्ठ-४३३

३२- ज्ञानरंजन-फैंस के इधर और उधर- तथा कलह कहानियाँ- फैंस के
इधर और उधर- कहानी संग्रह ।

३३- महीप सिंह- धुंधले चेहरे- इक्यावन कहानियाँ- कहानी संग्रह ।

३४- अन्विता अग्रवाल- रबर बैण्ड-मुट्ठी भर पहचान- कहानी संग्रह ।

३५- सुधा अरोड़ा- घर-बंगैर तराशे हुए- कहानी संग्रह ।

३६- महीप सिंह- कील- इक्यावन कहानियाँ- पृ० २३२

३७- नरेन्द्र मोहन- हिन्दी कहानी : दो दशक की यात्रा, सं० रामदरश मिश्र-
पृष्ठ-९९

३८- उषा प्रियम्बदा- जिन्दगी और गुलाब के फूल- जिन्दगी और गुलाब
के फूल- कहानी संग्रह- पृष्ठ-१४४-१५३

३९- उषा प्रियम्बदा- पैरम्बुलेटर- जिन्दगी और गुलाब के फूल-कहानी संग्रह।

४०- ,, - स्वीकृति- कितना बड़ा झूठ-कहानी संग्रह, पृ० ५७

४१- ,, - प्रतिध्वनियाँ- कितना बड़ा झूठ-कहानी संग्रह ।

४२- हिमांशु जोशी- एक समुद्र भी- अकहानी-सं० श्याम मोहन श्रीवास्तव,
तथा सुरेन्द्र अरोड़ा- पृ० १०२

४३- मोहन राकेश- पहचान- पहचान तथा अन्य कहानियाँ- कहानीसंग्रह,

४४- उपरिवत् ।

४५- द्रष्टव्य-अपने पार(राजेन्द्र यादव) कहानी संग्रह,
जिन्दगी जलती है(शानी), माया दर्पण(निर्मल वर्मा) आदि कहानियाँ।

४६- शान्ति मेहरोत्रा-टूटती कड़ियाँ- नई कहानियाँ-मार्च १९६५

४७- द्रष्टव्य- निश्चय(कुलभूषण), पाँचवें माले पर फ्लैट (मोहन राकेश), यही सच है(मन्नू भंडारी), दूसरे के पैर(अमरकान्त वर्मा), एक कमजोर शाख(सुरेश सिन्हा) , रबर बैंड(अन्विता अग्रवाल), सुहागिनें(मोहन राकेश) आदि कहानियाँ ।

४८- डा० रामविलास शर्मा- अस्तित्ववाद और नई कविता -आलोचना पत्रिका- पूर्णांक ४६, अप्रैल-जून १९६६,पृष्ठ-८

४९- मन्नू भंडारी-यही सच है-यही सच है- कहानी संग्रह तथा हिन्दी कहानी : १५ पग चिन्ह सं० प्रो० महेन्द्र प्रताप-पृष्ठ-२११

५०- निरुपमा सेवती-'शायद हाँ, शायद नहीं- धर्मयुग -२८ दिसम्बर-१९७५ पृष्ठ-४५

५१- डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय-आधुनिक कहानी का परिपार्श्व- पृ० १११

५२- महीप सिंह- घिरे हुए क्षण- इक्यावन कहानियां- पृ० २२२

५३- मोहन राकेश- अपरिचित- क वार्टर तथा अन्य कहानियां-कहानी संग्रह, पृष्ठ-१५१

५४- दीप्ति खंडेलवाल- शेष-अशेष- कड़वे सच-कहानी संग्रह ।

५५- ,, - एक पारो पुरवैया- कड़वे सच- कहानी संग्रह, पृ०५०

५६- ,, - देह की सीता- कड़वे सच- कहानी संग्रह,पृ० ६४

५७- ,, - आत्मघात- कहानी पत्रिका-जुलाई १९७५-पृ० १४

५८- उपरिवत्- पृ० १५

६२- मृणाल पांडे- आहटें- सारिका पत्रिका- फरवरी १९६९

६३- ,, - शरण्य की ओर- सारिका पत्रिका- फरवरी १९७०, पृष्ठ-१९

६१- मृदुला गर्ग- कितनी कैदें- कितनी कैदें- कहानी संग्रह ।

६२- उपरिवत्- पृष्ठ-

६३- रजनी पनिकर- नारी नहीं- नारी का विज्ञापन । सारिका पत्रिका, सितम्बर-१९६४.

६४- महीप सिंह- व्लाटिंग पेपर- इक्यावन कहानियाँ- पृ० १६१

६५- रजनी पनिकर- दायरे और दायरे- ज्ञानोदय पत्रिका- सितंबर-१९६७

६६- महीप सिंह- और और वृत्त- इक्यावन कहानियाँ- पृ० ८०

६७- सुधा अरोड़ा- इस्पात- साप्ताहिक हिन्दुस्तान, २६ जनवरी, १९६९ पृष्ठ-२३

६८- उषा प्रियम्बदा- मोहबन्ध- जिन्दगी और गुलाब के फूल-कहानी संग्रह ।

६९- मन्नू भंडारी- एक बार और ---- एक प्लेट सैलाब-संग्रह ।

७०- उषा प्रियंबदा- कोई नहीं ---- एक कोई दूसरा- कहानी संग्रह ।

७१- निर्मल वर्मा- पिक्चर पोस्टकार्ड- परिन्दे- संग्रह ।

७२- मन्नू भंडारी- ऊंचाई -नयी कहानियाँ- दिसम्बर १९६३

७३- उपरिवत्-पृष्ठ ८ से २७

७४- द्विजेन्द्रनाथ निर्गुण- घोड़ी- सारिका पत्रिका- जुलाई १९६६

७५- शानी- छोटे घेरे का विद्रोह- छोटे घेरे का विद्रोह- कहानी संग्रह ।

७६- मोहन राकेश- फौलाद का आकाश- फौलाद का आकाश-कहानी संग्रह ।

७७- मन्नू भंडारी- तीसरा आदमी- यही सच है- कहानी संग्रह- पृष्ठ-५४, तथा नयी कहानियाँ- मई १९६५,

७८- शैलेश मटियानी- तीसरा सुख- सफर पर जाने से पहले- कहानी संग्रह ।

७९- मन्नू भंडारी- बन्द दराजों का साथ- सारिका पत्रिका- मार्च-१९६७, पृष्ठ-१५

८०- मोहन राकेश- ग्लासटैंक- फौलाद का आकाश- कहानी संग्रह ।

८१- ममता कालिया- जिन्दगी सात घण्टे बाद की- क्षुटकारा- कहानी संग्रह ।

८२- मोहन राकेश- सुहागिनें- पहचान तथा अन्य कहानियाँ-संग्रह ।

८३- द्रष्टव्य- भविष्य के पास मंडराता अतीत, टूटना,(राजेन्द्र यादव), एक और जिन्दगी (मोहन राकेश) आदि कहानियां ।

८४- रवीन्द्र कालिया-सत्ताइस साल की उमर तक- नौ साल छोटी पत्नी- कहानी संग्रह ।

८५- श्रीकान्त वर्मा- दूसरे के पैर- फाड़ी- कहानी संग्रह ।

८६- श्रीकान्त वर्मा- परिणय-फाड़ी- कहानी संग्रह ।

८७- उपरिवत्- पृष्ठ-११०

८८- श्रीकान्त वर्मा- ट्युमर- फाड़ी- कहानी संग्रह ।

८९- श्रीकान्त वर्मा- परिणय-फाडी -कहानी संग्रह, पृ० ११०

९०- ममता कालिया- अपत्नी- क्षुटकारा- कहानी संग्रह, पृ० ४२

९१- उपरिवत्- पृष्ठ-४०

९२- दूधनाथ सिंह-शिनाख्त- सुखान्त- कहानी संग्रह-पृष्ठ-४६

९३- द्रष्टव्य-दूसरे का भोग(गंगाप्रसाद विमल), अनुपस्थित सम्बोधन (राजेन्द्र यादव), तलाश(कमलेश्वर) तथा रिश्ता (गिरिराज किशोर) आदि कहानियाँ ।

९४- शान्ति मेहरोत्रा-टूटती कड़ियाँ- नई कहानियाँ- मार्च-१९६५

९५- काशीनाथ सिंह- आखिरी बात- लोग बिस्तारों पर- संग्रह ।

९६- काशीनाथ सिंह- आदमी का आदमी- लोग बिस्तारों पर- कहानी संग्रह।

९७- दूधनाथ सिंह-विजेता- सुखान्त-कहानी संग्रह ।

९८- कमलेश्वर- फालतू आदमी- मांस का दरिया- कहानी संग्रह ।

९९- राजेन्द्र यादव- प्रतीक्षा-राजेन्द्र यादव की श्रेष्ठ कहानियाँ-कहानी संग्रह ।

१००- ज्ञानरंजन- क्लांग-फैंस के इधर और उधर- कहानी संग्रह ।

१०१- शानी- काले घेरे का विद्रोह- काले घेरे का विद्रोह-कहानीसंग्रह ।

१०२- दीप्ति खंडेलवाल- आधार- कहानी पत्रिका- दिसम्बर १९६९

१०३- द्रष्टव्य- आखिरी सामान, फौलाद का आकाश, उसकी रोटी(मोहन राकेश) शर्त का क्या हुआ(शानी) आदि कहानियाँ ।

१०४- मन्नू भंडारी-बंद दराजों का साथ- एक प्लेट सैलाब- कहानी संग्रह, पृष्ठ-२४,२५,२७,२९

१०५- द्रष्टव्य-शीश कटी(पानू खोलिया) घिराव, काला बाप- गोरा बाप (महीप सिंह) स्वप्न जीवी(सुधा अरोड़ा), मोहबन्ध(उषा प्रियंबदा) आदि कहानियां ।

१०६- कमलेश्वर- जो लिखा नहीं जाता- मांस का दरिया-कहानी संग्रह, पृष्ठ-७२-७३

१०७- द्रष्टव्य- काला रजिस्टर(रवीन्द्र कालिया), फटा हुआ जूता, मिसपाल, रोजगार(मोहन राकेश) कहानियाँ

१०८- द्रष्टव्य- मरुस्थल(मोहन राकेश), काला बाप: गोरा बाप(महीपसिंह) आदि कहानियां ।

१०९- द्रष्टव्य- गुनाहे बेलज्जत(मोहन राकेश), मांस का दरिया,तलाश (कमलेश्वर) आदि कहानियां ।

११०- कमलेश्वर-नई कहानी की भूमिका- पृष्ठ-१९,१६९

१११- डॉ० श्रीमती सुशीला मित्तल-आधुनिक हिंदी कहानी में नारी की भूमिकाएं- पृ० १००,१०१

११२- डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय- आधुनिक हिं कहानी का परिपार्श्व-पृ०१०३